रमेश नीलकमल

जन्म : 21 नवम्बर, 1937

रचना-संसार

❑ कविता • आग और लाठी • बोल जमूरे • मांझी मन होशियार • अपने ही खिलाफ

❑ कहानी/लघुकथा • एक और महाभारत • नया घासीराम • लघुकथा और लघुकथा

❑ रम्यरचना • काला दैत्य, राजकुमारी और पहियों पर राजमहल • आज कविता तुम्हारी करे आरती

❑ समीक्षा/निबंधादि • समय के हस्ताक्षर • गमलों में गुलाब • किताब के भीतर किताब

❑ शोधेतिहास • वैश्यों का उद्‌भव और विकास • मुंगेर जिले के साहित्यकार

❑ भोजपुरी विविधा • मन ना मानल

संपादन संसार

• संभावनाओं से परे • दर्द अभी तक हमसाये हैं • एक और आसमान • कोसी के आर-पार • कथा-पारिजात • जकी अनवर और उनकी कहानियाँ • कहानियों का सच • राजकमल चौधरी : सृजन के आयाम • मूल्यांकन के घेरे में • निराला निराला.

सम्प्रति : स्वतंत्र लेखन एवं संपादन

सम्पर्क : 'शब्द कारखाना' कार्यालय
अक्षर विहार, अवन्तिका मार्ग, जमालपुर-811 214.

मन ना मानल

रमेश नीलकमल

मन ना मानल

भोजपुरी विविधा

रमेश नीलकमल

मीनाक्षी प्रकाशन MEENAKSHI PRAKASHAN

MANA NA MAANAL (Bhojpuri Miscellenious)
by Ramesh Neelkamal

Price : Rs. Fifteen only

• मन ना मानल (भोजपुरी विविधा)

© रमेश नीलकमल

• **प्रकाशक : मीनाक्षी प्रकाशन Meenakshi Prakashan**
डी-62, गली नं.3, लक्ष्मी नगर, नई दिल्ली-92

• **मुद्रक : एस. एन. प्रिंटर्स**
एम-72, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

• **आवरण :** मीनाक्षी

• **मूल्य :** पनरह रुपिया केवल

आश्लेष

अनेक पुस्तकन के रचनाकार अंउर मैथिली शरण पुरस्कार से पुरस्कृत कवि-कथाकार-गीतकार-निबंध लेखक अउर एगो सफल समीक्षक श्री रमेश नीलकमल साहित्य जगत खातिर अपरिचित नइखन। अगर कवनो साहित्य प्रेमी साचो नीलकमल के ना जानत होखें त ओकरा अपना अभागा माने के चाहीं। अइसन हम एह कारण से कहत बानी कि एह व्यक्तित्व के ठीक से जानत बानी। एह बहुआयामी व्यक्तित्व के बहुत नियरा से देखे-सुने के मौंका मिलल बा। जवन सभ में होला तवन नीलकमल में बा अउर जवन नीलकमल में नइखे तवन कतहीं ना मिलि सकेला।

अभी अभी श्री नीलकमल के एगो रचना एह आदेश का साथ मिलल कि एकर भूमिका दू पेज में लिखि के भेजि दिहल जाय। अब रउरे बताईं अतना बरिष्ट साहित्यकार के भूमिका हमरा लेखा नगण्य लेखक लिखे, एकर का तुक बा। हम गौरव के अनुभव करत बानी। नीलकलम साहित्य का आकाश में सूर्य लेखा भासमान हो रहल बाड़न। जे अपना रचनाधर्मिता अउर कीर्ति से अतना विख्यात बा ओकर कबन प्रशंसा? कस्तूरी के पहचानत ओकरा गंधे से होला–नहि कस्तूरिका गंधः शपथेन विभाव्यते।

'मन ना मानल' के छपल प्रति देखि के मन में हिलोर उठे लागल। एह पुस्तक में साहित्य के विविध रूप–विविध विधा के विवृति बा। कविता, कहानी, संस्मरण अउर समीक्षा। कहे के मतलब जे श्री नीलकमल के लेखनी अनेक विधा में माहिर बिया। ई ग्रंथ भोजपुरी में बा। भलहीं भाषा पर मगही के झाक आ जात बा, बाकिर हम दावा का साथ कहि सकत बानी कि एकर तेवर, तलखी अउर मुहावरेदानी सजा-संवारि के राखल गइल बा। उपमा जवन भी आइल बाड़ी स तवन सभ के सभ निजुठ-बहुत सोचि समुझि के। कुछुए दिन भोजपुरियन का साथ रहि के श्री नीलकमल भोजपुरी भाषा के ओइसहीं पुरोधा हो गइल बाड़न जइसे चीनी यात्रा हवेत्सांग नालन्दा विश्वविद्यालय में विद्या अर्जन करत करत अध्यापन करे लागल रहे।

'मन ना मानल' में कुछु कविता छन्द का बंधन से मुक्त बाड़ी स। एह में तुक चाहे अनुप्रास के चमत्कार नइखे। बाकिर साच कहल जाय त अनुप्रास कविता के धर्म ना ह। तुक त कविता के अलंकार ह–सौंदर्य ह। कविता के धर्म ह ओकर प्रवाह–**चली सुभग कविता सरिता सों**। बाकिर कुछ आलोचकन का राय में वस्त्र अउर भूषण से लदल-फदल

नारी ओतना सुघर ना लागे जतना गांव के भोला स्वभाव वाली युवती जवन सीधा सादा परिधान में रहेले। महाभारत में कहल गइल बा कि महाराज दुष्यन्त का महर्षि कण्व का आस्रम में शकुन्तला जतना सुन्दर दिखाई परलि रहे ओतना अपना राजमहल में ना सुंदर लागलि। एह सीधापन अउर सपाटबयानी खातिर हम नीलकमल के प्रशंसा करत बानी।

श्री नीलकमल के एगो कहानी **मन ना मानल** त अइसन बनल बिया कि हमरा दिल दिमाग पर सिनेमा का रील लेखा चक्कर काटि रहल बिया। तीस हजार रुपया पाके लवटा देवे वाला फलविक्रेता जब एगो चम्मच चोरा के जेब में डालि लेत बा। इहवां ओकर अपना बच्चा के प्यार प्रदर्शन ओकरा मुंह से निकलत वाणी से अइसन भइल बा कि मन चकित-चमत्कृत हो के रहि जात बा। नीलकमल का जादू भरल कलमें से अइसन कहानी संभव रहे।

बहुत दिन भइल श्री नीलकमल जी से भेंट भइला। बाकिर एह मनीषी के ना त हम भुला सकल बानी ना ई मनीषी हमरा के भुला सकल बाड़न। ई हम एक दावा का साथ कहि रहल बानी कि 'मन ना मानल' में जगह जगह हमार चर्चा भइल बा। अब हम साहित्यकार नइखीं रहि गइल। बुढ़ापा के गीध हमरा काया का मुड़ेरा पर आके बइठि गइल बा। बाकिर अतना का बादो नीलकमल जी दू-चार शब्द लिखे के आदेश दिहलन ओकरा के हम आपन सौभाग्य मानत बानी। ग्रंथ अक्षम कीर्ति अर्जित करे, एही शुभ कामना का साथ।

आचार्य गणेश दत्त किरण
10 अगस्त, 2000 ई.

फेज नं. 1, पाकेट 4
157ए, मयूर बिहार,
दिल्ली-92
दूरभाष–011-2716300

• मन ना मानल •

कहां का बा –

कविता

बरिसन से चीखत मेढ़क / 7
सउंसे सहर के / 8
बाघ / 9
सभापति के तलास / 11
का हो लइका बेचतारऽ / 13

गीत-नवगीत

आइल बा / 17
अंखियन में लउकऽता बबूल / 18

कहानी

✓मन ना मानल / 19
अविश्वास / 24
केहू एंगो बीमार / 27

कहकहा...नी

ग्रहन / 29

समीक्षा

गुलछर्रा / 32
लोढ़ा / 35

चिन्तन

✓बाकिर जियान मत करीं / 39
अथ कहानी-कथा / 42

संस्मरण

✓अक्षर पुरोहित पं. शिवनाथ चौबे / 45

समधिन
श्रीमती राजकुमारी देवी खातिर

बरिसन से चीखत मेढ़क

बरिसन से चीखत मेढ़क
आपरेसन् थियेटर का मेज से
उछल के
अपनहीं खून से भरल बाल्टी में
गुम हो गइल बा।
डाक्टरन भा नर्सन के भीड़
छपिटाइल हाय-हाय करत
खोजऽतारे ओकरा के
नगरन में / सड़कन पर
तबहिएं खेतन का दरार से
टर्र...टों...टर्र...टों...
आवाज सुनाई पड़ल—
आईं जा, हम इहां बानी
हमार वोट
राउरे खातिर बाटे

सउंसे सहर के

सउंसे सहर के
मलेरिया हो गइल बा
आउर
हम ऐन चउराहा पर
कुनाइन के गोली मांगत भीड़ के
गरियावत बानीं।
काहे कि ओकरा ई मालूमे नइखे कि
कुनइनवो के अनोखा अनोफिल
काटि खइले बाटे
आउर
जहर उगलत जोंकवो
ई मान कइले बइठल बा कि
लोग ओकरा के नीलकण्ठ
काहे नइखे मान लेत।

बाघ

रउआ मरले होखब बाघ
बाकिर ऊ अभियो टहल रहल बा
सीना तनले / गांव के गलियारन में
सभकरा घर के दरवाजा त खुलल बा
ऊ भीतरो दाखिल हो सकेला।
के मना करी?
बाकिर ना
ऊ हो दहशत के दीवारन से कैद बा
काहे कि दरवजवन में केवाड़ का जगहा पर
लागल बा आईना
जेकरा में ऊ आपन सकल देखऽता
अउर सोचऽता कि
भीतरो में एगो बाघ बा
ओकरो से अधिका भयंकर
डरावना
बाकिर बेअख्तियार
दरवजवन का भीतर कैद
ऊ कि गलियो में नइखे आ सकत
सड़क पर ना जा सके
बाकिर बाघ त बाघे हऽ
अन्दर चाहे बाहर
एके नियन दहसत

एक दूसरा से चाहे अपना लोगन से
भा फेर सपना से
रउआ जानते होखबि सायद कि
बाघ जबे सपना देखऽता
ऊ बिलइयन से घिरल रहऽता
दूध-बतासा के कहानी सुनत-सुनत
होठ पर फेरत रहऽता आपन जीभ
बीतल बातन में लेताटे रस
काहे कि वर्तमान का बिगड़ गइल बा स्वाद
भविष्य का आंखन में नइखे आह्लाद
रोसनी पथरा गइल बा
अंधेरा बदल लेले बा आपन सकल
जे बाघ के ह
जेकरा रउआ मरले होखब
बाकिर ऊ अभियो टहल रहल बा

सभापति के तलास

कतना छली बाटे आसमान
सभ तरेगन के जुटा के खोजऽताटे चनरमा
छुपवले बा जेकरा के अपना आसतीन में

कतना बरियार बाटे शेर
जंगल के जानवरन के जमात बुला के
कहऽताटे—लड़बि हम सबसे अलगे-अलग

कतना नकली बाटे हमार स्वाभिमान—
माटी के तन माटी नियन मन
तनी पुरबा बहल त गीला हो गइल
पछुआ चलल त गोला हो गइल
बाकिर ई त गाली ह
एह गली से वोह गली मुंह मारत
ई त फगुनिया के घरवाली ह

कतना असली बानी हम
केकरो से जवो भर ना कम
रोज मारऽतानी बाघ
बाकिर टस से मस नइखीं होखत
हम चाहियो के मन्दिर के कलस नइखीं हो पावत

हम, हमार स्वाभिमान
शेर के पीठी पर आसमान
बिसात बिछवले बानी
मोहरा बइठवले बानी
जगवले बानी नवजागरन के परकास
आज के एह सभा खातिर बा सभापति के तलास
हम नाम बताइब
रउआ समर्थन करबि
रउआ दे देबि उनकरा हाथ में एगो माइक
अउर निवेदन करबि—बोलीं जा
—सियावर रामचन्द्र की जय...जय...।

पा लिहनी, पा लिहनी
आर्किमिडीज के तरह हम चिलाइबि
ऊ त नंगा रहे हमाम से निकलि के
हम त अइसहीं खड़ा हो जाइबि
काहे कि हमनीं का त कपड़ा पहनियो के नंगा बानी।

का हो, लइका बेचऽतारऽ ?

हां जी मलिकार, हम लइका बेचऽतानी।
भांति-भांति के, तरह-तरह के
पढ़ल-अनपढ़ल, सेवक-मालिक
करिया-गोर, रंग-बिरंगा।
लइकन के त अम्बार लागल बा
आईं जा, परखीं जा
ले सामर्थ्य-तराजू संगं में।

बाकिर एगो शर्त्त बा, देवता!
लइकी होखे के चाहीं गोर, चाहे बुधिगर रहे ऊ थोर
अनपढ़ो होई तऽ चल सकेले, बाकिर धन ले आवे लाख-करोड़
गहनो ले आवे, कपड़ो ले आवे, मोटरो भा स्कूटरो लावे
आंखिन पर तब उनका बिठाईं, आपन बेटवो पर बलि जाईं
का कहलीं सरकार? बानगी?
त देखीं जा देवता, हम लइका बेचऽतानी
त एक-एक लइकन के भृगु-संहिता हमरा जबान पर हवे—

देखीं जा—
ई हवन श्याम सुन्दर व्यास, बी॰ ए॰ पास
काहे हो गइलीं रउआ उदास

डारविन के थ्योरी, बन्दर के अवलाद
परि गइल का रउआ के इयाद
बाकिर भूलबि जनि–
बीस बीघा जमीन, बिगहन फइलल मकान
ट्रैक्टरन के घरर्-घरर् से बन्द होखता कान
खानदानी हवे, रुतबा ह, ऊंच वा रिसता-नाता
फीयट पर बइठके टहले खातिर जाता
का पूछतानी? दाम?
राम राम! राम राम!
दाम का बा? सिरिफ पनरह हजार
फ्रीज, डबल बेड, कपड़न के बजार
बरतियन के स्टील के थाली
भंडार घर पड़े के ना चाहीं खाली
मोटरन के काफिला स्टेशन भिजवाईं जा
बाकिर एक शर्त्त बा, देवता–
टी॰ टी॰ बाबू से कहिके बिना टिकट यात्रा करवाईं जा
चूं-चपड़ जनि करब
आज के बाद कल आइब
त पनरह के बदला अठारह भरब।

अउरो देखीं–
ई हवे वेणी माधव गुप्त
रंग त गोर बा, बाकिर बुद्धि बा सुप्त
बड़हन तेज बा–एकर गुमान ह
नोकरन पर चलि रहल दुकान ह
नवीं जमात पास हवन ना फेल
कुदरत के देखीं जा खेल

खेलऽतारे लाखन में
हजार तक गिनतियो नइखे आवत
बाकिर देखि-देखि के
अंग्रेजी में चिट्ठीयां लिखि ना पावत।
का पुछलीं ह, देवता? दाम?
हरे राम? हरे राम?
चउथा पास के त मिलल बा उनीस
ई त पड़ि रहल बा ओकरो से बीस
बाकिर चलिहें दसे में
काहे कि बाप इनिकर तिलक-विरोधी बा।
का कहलीं? दहेज?
जी हां, एकरा से कवन बा परहेज
ऊ त रउआ अपना बेटी के देवि।

टेप होखे भा फ्रीज, गैस के चूल्हा भा पंखा
सोना के सिकरी, तीन सेट कपड़ा
बरतन के त राउरे दूकान ह
जे चाहीं से दिहीं।

अउर ई हवन गरीब दास–
बात कवनो नइखे खास, सभ सधारने वा
ट्यूशन करऽ त चूल्हा फूंकऽ
बस इहे साधने बा
बाकिर पढ़े में बा मजिगर, बा खलिहापेट
रहे के न झोपड़ी, खप्पर ना खाट
बाकिर एकरा बाप के तिलके के बा चाट
(दस से कम पर त ई हो ना मानी)

जाईं जा धरे एकरा
बांस के खटिया पर फटल चादर तानी
सूखल रोटी पर मिरचाई के चटनी
मिले त आपन भाग्य के सराहीं जा
बेटिये जनमावऽतानी त
गरीबे दास के ले जाईं जा।

का कहऽतानी?
आप गइलीं ऊब?
वाह खूब, वाह खूब?
आप हईं बेटी के बाप
भोगत हईं जा पहिलका जनम के पाप
का कहलीं? लइकी विया काली?
कलूटी का हवे राउर घरवाली?
रउआ त गोर हईं
का कहलीं, गरीब हईं
किसमत के मारल जे ओकरे करीब हईं
त जाईं रउआ सभ
माथा मत खाईं जा
बेटी के कासी करवट दिलवाईं जा
हमार समय जनि खराब करीं
आज त बोहनियो ना भइल ह
अउरो दोसर गांहक आवे दिहीं,
देवता!

आइल बा...

आइल बा गांव से खबर—
बाबू के दरदो ना छूटल
भाई के लग गइल नजर।
खेतन-खरिहानन में, घुन लगल मकानन में।
खोजत रहले बाबू भूख के दवा
दनवों पर लिखल नाम आइल तनिको ना काम
रिश्ता के बात कहीं हो गइल हवा।
लाठी-अस पड़ गइल गजर—
बाबू के दरदो ना छूटल
भाई के लग गइल नजर।
लिखऽतारे, भाई के, आ बुढ़िया माई के
ले जाके बांध दिहल बरगद के छांव
भाई जब चिचिअइले, उनका गुस्सा अइले
मारे तब लगले ऊ, ठांव भा कुठांव
कहल गइल भूत के असर—
बाबू के दरदो ना छूटल
भाई के लग गइल नजर।
उनुकर पढ़ुआ बेटा, बनि गइल इहां नेता
बाकिर सहेजलसि ना गांव के सवाल
कइसन ई सहर-जाल, उलझत बा तीन काल
याद सिर्फ रहि जाला रोटी आ दाल।
केंचुल में बन्द हमसफर—
बाबू के दरदो ना छूटल
भाई के लग गइल नजर।

अंखियन में लउकऽता बबूल

अंखियन में लउकऽता बबूल
हो बसन्त, जनि अइहऽ
गांव का सिवाना पर।
अभिये नू खेत के फसल हरियर
पाला से सहमल झउंसाइल बा
भूख दरद, बेकारी के कारण
गांवन के गति-मति बउराइल बा

बेधत बा हियरा में शूल
हो बसन्त, जनि अइहऽ
दरद का मुहाना पर।
सच बाटे मौसम ई बचपन के
लाल लाल सुरुज तक दउरवलसि
मन के अभिमन्यु रक्तस्नात भइल
जीवन के सार ऊ कहां पवलसि

नहिये अब खिलिहें ई फूल
हो बसन्त, जनि अइहऽ
मरम का ठिकाना पर।
पात-पात अझुरावे बेमानी
डेहुंगी के मोहभंग होखत बा
चन्दन-वन में बा उनचास पवन
धूनत बा सिर, माली रोवत बा

डूबे जब लागे मस्तूल
हो बसन्त, तब अइहऽ
गांव का मिवाना पर।

मन ना मानल

अमरनाथ हाथ उलटिके घड़ी देखलस। अभी दुइये बजत रहे। पूर्णिया जायेवाली बस त चार बज के पैंतीस पर बाटे। ऊ मनेमन कुछ सोचलसि आ बस-स्टेशन का नियरा पीपर के मजिगर छांव के ओरि बढ़ि गइल।

अमरनाथ के त रउआ जानते होखब। अरे! उहे जे दास वस्त्रालय पूर्णिया के मालिक दासबाबू के कर्मचारी हवे। चुस्त-दुरुस्त। अपना काम में चौकस। ऊ त दासबाबू के हिरदय जीति लेले बाड़े। दासबाबू त अब ओकरा के बेटो से अधिका मानऽतारे—ई बात रउआ जानते होखब। ई एह कारण कि दासबाबू ओकरा के तरो-तगादा करे खातिर भेजे लगलन।

ओह दिन जे दिन के बात हम रउआ के बतावे जा रहल बानी, अमरनाथ फलका, पोठिहा, मीरगंज, कुरसैला अनेक जगहन के व्यापारियन से तगादा कके तकरीबन तीस हजार रुपया पवलसि। सभ नोट के ऊ एगो थइला में राखिके एह तरे निश्चिन्त होके घूमत रहल कि शायदे केहू के सन्देह होखे।

ऊ कुछ खइले-पीयले ना रहे। पासे के एगो होटल में कुछ खा-पीके ऊ स्टेशन के नियरा बस के पता लगावे गइल रहे। सभ बस जा चुकल रहे। सिरिफ चार-पैंतीस वाली बाकी रहे।

एतना देर त आराम कइल जा सकऽता—ऊ सोचलसि। पूर्णिया से चार बजे भोरवाली बस से चलल रहे। राति खा नींद पूरा ना भइल रहे। अलसाइल रहे शरीर। बाकिर काफी पइसा रहे पास में। एही खातिर चौकसो रहे मने-मन।

पीपर के छांव तर एगो बूढ़ आम बेचत रहे। बेंचत का रहे, आम के टोकरी में सजवले ग्राहक के राह ताकत रहे। अमरनाथ के अपना ओरि आवत देखिके ऊ सोचलसि कि अब ग्राहक आइल। बाकिर अमरनाथ ओकरा ओरि ना जाके पीपर के जरी जाके ठहरल आ बुढ़वा के ओरि ताकि के बोलल—'राम राम काका। चार-पैंतीस वाली बस आई त जगा दिहऽ, काका। तबले तनिका आराम क ले तानी।'

बुढ़वा के ओंठ पर आवत मुसकान गायब हो गइल। दू सौ आम उधार खरीदले रहे। बेंचले रहे त कतना? सिरिफ पांच किलो। सोचले रहल कुल बिक जाइत त राति खा भोजन खातिर चावल-दाल-आटा लेके घर लवटितीं। बचवन के मुसकानो लवटि आइति।

मुदा आजु का दिन केकर मुंह देख के उठल रहे ऊ? ग्राहको ना आवत रहे ओहि ओरि। का करे ऊ? चलत खा बिटिया खातिर बार्ली आ मिश्री लावे के कहले रहे घरवाली। बेटिया ताकते रहे सहमल-सहमल नजर से। दस्त चलत रहे ओकरा। गांव के कम्पाउन्डर, जे कम्पाउन्डर कहला पर लागत रहे कि अंखिये से खा जाई अउर डाक्टर साहब कहला पर खींस निपोर देत रहे, कहले रहे कि बार्ली आ मिश्री उबाल के दिहऽ। पर-साल जीतनबाबू के घरे गइल रहे त देखले रहे कि एगो छोटहन बाची (लइकी) चम्मच से उठा-उठा के दूध पीअत रहे। अपनो बिटिया चम्मच से दूध पीअत कइसन लागी—ऊ सोचिओ ना सकत रहे। सोचले रहे—बार्ली-मिश्री के साथे एगो अल्युमीनियम के चम्मचो ले लिहल जाई। बाकिर अफसोसे बा कि ग्राहक त गदहा के सिर से सींग गायब होखे लेखा गायब बाड़े। अइहें का, तकबो नइखे करत।

का करे, का ना करे ऊ—ई बात ओकरा दिमाग में एह कदर समा गइल रहे कि ऊ विचारहीन होके सिरिफ सड़क के ओरि ताकत रहे। बाकिर केहू ओकरा से पूछो कि का का देखलऽ, त शायदे बता पावे ऊ।

बस-स्टेशन पर बस आ गइल रहे। ऊ चिचिआइल भूलि गइल, सिरिफ बस का ओर ताकत रहे। कण्डक्टर चालान ले चुकल रहे। चालको आपन जगह पर बइठ गइल रहे। बस अब खुलहींवाला रहे। तब अंचानक ओकर नजर अमरनाथ पर पड़ल। सभ बात भूल गइल ऊ—बाकिर इयाद रहल एक बात कि ई युवक ओकरा राम-राम काका आ चार-पैंतीस के बस बेला जगा देबे के कहले रहे। ऊ ऊहें से पुकरलसि—'ओ बाबू, ओ भइया, बस आ गइल। उठीं-उठीं।'

अमरनाथ आंखि खोललसि, त सामने देखलसि कि राज्य परिवहन के बस घरघरात रहे। तीर अस छूटल ऊ, धउरिके बस में ढूकि गइल आ बस रफ्तार ले लिहलसि।

आम बेचेवाला के जान में जान आइल। अभी थोड़िके देर ऊ अगर अनसाइल रहित त अमरनाथ के बस ना मिलल रहित आ फेनु दोसर बस ना जाने कब मिलित?

बाकिर ई का? एगो थइला पीपर के जरि में परल बा। बुढ़वा सकपकाइल उठल आ थइला उठा लिहलसि। भारी लागल। सोचलसि—चलीं, बइठिके देखीं। शायद ओही युवक के छूटल होखे। शायद का, ओकरे होखबे करी। काल्ह लवटी आ कब लवटी ऊ, ओकरे के दे दिहल जाई।

उत्सुकता रहे त ऊ थइला के खोलिके देखलसि त अंखिए चौंधिया गइल। रुपया-ही-रुपया रहे ओकरा में। ऊ थइली के बन्द करिके अपना टोकरी का नीचा छिपा लिहलसि। इहां सड़क पर गिनी त लोग देखिहें आ हाला हो जाई। का करे ऊ? वो युवक के जब अचके पता लागी कि ओकर रुपयावाली थइली इहां छूटि गइल बा, त ओकर दिल चनक जाई। आपन पइसा त होई ना। केहू दोसरे के होई त ऊ बेचारा नाहक परेशान होई। बिना चोरी कइले चोर कहा जाई।

बस के रफ्तार बढ़त गइल आ एह बीच कण्डक्टर अमरनाथ के नियरा आके बस भाड़ा मांगे लागल। तब अमरनाथ अकचका गइल। अरे! ऊ त आपन थइला उहें पीपर का जरी तर छोड़ि दिहले बा। अब काटे त खून नइखे। बस रोकवा के उहें उतरियो जाय त अबतक दस-पनरह किलोमीटर के दूरी दउरि के त पूरा ना कइल जा सकऽता। का जाने, तबतक केहू ऊ थइला के उठा ना लेले होखे। ऊ बुढ़वा त उहां रहे, मुदा अबतक ऊ या त थइला उठाके ले गइल होई आ ना लेले होई त आपन अमवे उठाके बेचे खातिर निकल गइल होई। दूनो स्थिति में थइला त मिलबे ना करी। ऊ एतना किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गइल रहे कि कण्डक्टर बार-बार पूछत रहि गइल, बाकिर ऊ जवाब ना दे सकल। का कहो ऊ? लोग ओकरा के मूरख समझिहें। अगिला पड़ाव आइल त ऊ कण्डक्टर का हाथ में दू रुपिया के नोट पकड़ावत उतरि गइल। एगो बस खड़ा रहे उहां। एकरे से लवटि जाइल जाव। देखि लिहल जाव। शायद मिलिओ जाय।

एने बुढ़वा के स्थितिओ अजीब रहे। सांझि हो चलल। सोचत रहले ऊ—बचवा राह देखत होई। आम नइखे बिकल त का, भगवान त एतना ढेर रुपया एके साथ भेज देले बाड़न। एकरा से त टन भर बार्ली आ मन भर मिश्री खरीदल जा सकेला। गिनल त जाव, कतना बा? बाकिर ना, लोग देखिहें त भीड़ लागि जाई। मुदा ऊ युवक के का होई? ऊ त एतना रुपया हेरा के मरि जाई। शायद ऊ लवटि के आवे। देइये देवि ओकरा के। ना त का पता, उ का करी। कमाई के त पइसा ना नू ह। काल्हि कवनो ना कवनो उपाय हो जाई। बुढ़वा दोल्हमाल में रहे। कवनो निर्णय ना ले सकत रहे।

शाम गहरात जात रहे, बाकिर ऊ अपना जगह से उठत ना रहे। लवटाइये दी ऊ। बस-स्टैण्ड के बाबू मिसिरजी व्यंगो कइलन कि 'अब का अन्हरियो के आम बेचबऽ। जा घरे। काल्हि बेंचि लिहऽ।' बाकिर बुढ़वा उठल ना। का जाने, शायद युवक लवटि आवे आ बुढ़वा के ना पाके उठाईगीर समुझि ले। छिः...उठाईगीर!

तले पूर्णिया से आवेवाली बस आके रुकल। उहे युवक हड़बड़ाइल अस चिन्तामग्न चेहरा लेले उतरल आ पीपर के गाछ के ओरि दउरल। दूरे से बुढ़वा के देखि के आश्चर्य भइल। अंधेरा हो गइल बा, बाकिर उहे आमवाला अभी तक बइठल बा। जहां पहुंच के फेनु ऊ राम-राम कहलसि आ पूछलसि—'काका, हम हड़बडियाइल आपन थइली इहवां छोड़ि गइल रहीं। देखले बानी का?'

बुढ़वा ओकरा ओरि तकलस। आंखिन में निराशा झांकत रहे, बाकिर मन बड़ा उद्विग्न लागत रहे वोह युवक के। बुढ़वा तुरते थइला ओकरा सामने राखत बोलल—'लऽ बेटा, आपन रुपया गिन लऽ। एहतरी रुपया के थइली छोड़िके हमार परीक्षा लेत रहलऽ हा?'

अमरनाथ थइली खोलि के देखलन आ आश्वस्त भइला के बाद बुढ़वा के पांव छू के बोलल—'काका, तू हमार जान बचा लेले बाड़ऽ। मालिक के पइसा रहे। आजु तक

एको पइसा के चोरी ना कइलीं। ई चलि जाइत त मालिक का सोचिते कि तीस हजार देखते एकर नीयत बदल गइल।'

बुढ़वा अमरनाथ के चेहरा पर खिलल फूल के बटोरे में लागल रहे। सोचलसि–'ठीके कइले बानी जे लवटा दिहलीं। नाहीं त...

अमरनाथ बुढ़वा के पांव पकड़ि लेलसि। बोलल–'काका, हई ल पचास रुपया। तोहार ईनाम बा ई। मालिक के पइसा ना, हमरो इज्जत मान, प्रतिष्ठा तू बचा लिहलऽ।

बुढ़व हाथ हिलावत बोलि उठल–बेटा, देबे के त तूं मए थइलीए देले रहलऽ हा। अब पचास गो काहें के देतारऽ? लेवे के रहित त तूं अबतक इहां हमरा के पइतऽ? राखऽ बेटा, पइसा अपना पासे। हुशियार रहल करऽ, बेटा। पइसा के मामला बहुते होशियारी खोजेला।'

अमरनाथ हतप्रभ रहि गइल। केतना महान बा बुढ़वा। आम बेंचऽता। मुश्किल से दस-पांच कमा लेत होई। मगर परद्रव्येषु लोष्ठवत–दोसरा के धन ढेला लेखा बा एकरा खातिर। श्रद्धा से अमरनाथ के आंखि में आंसू आ गइल। ऊ अनुरोध कइलस–'काका! पइसा ना सही, चलऽ हमरा साथे जरा मुंहें मीठा कर लऽ। हमहूं भुखा गइल बानी। दूनों आदमी कुछु खा लेबि जा।

दिनभर के थाकल-भूखल-पियासल बुढ़वा अमरनाथ क ना ना कर सकल। सोचलसि–इहो त अब तक कुछु ना खयले होइहें। पइसा भुला गइला पर का भूखि लागेला? बोलल–"अच्छा, चलऽ बेटा! तोहरो बात रहि जाउ। तोहरो त भूखि लगिये गइल होई।'

आम के टोकरी समेटिके ऊ बुढ़वा उठल। अमरनाथ ओकरा के एगो होटल में ले गइल आ मिठाई के दू प्लेट के आर्डर दिहलसि।

दूकानदार दू प्लेटन में मिठाई राखिके दिहलसि। दूनों आदमी खइलन। उठलन आ बाहरी आ गइले। अमरनाथ दस के एगो नोट दिहलस दुकानदार के मिठाई के दाम खातिर।

दुकानदार दू प्लेट मिठाई आ एगो चम्मच के दाम कटलसि, त अमरनाथ झल्लइते–'चम्मच के पइसा? कइसन चम्मच? तूं त चम्मच नइखे बेंचत? हम खरीदबो ना कइली हां। दुकानदार बुढ़वा के ओर अंगुली देखा के बतवलसि कि ऊ एगो चम्मच उठा के जेब में राखि लिहले बाड़न।

अमरनाथ के काठ मारि दिहलसि। आरोप सुनि के त ऊ आपा से बाहर हो गइल। दुकानदार से उलझे लागल–अभिये न ई हमार हेराइल थइली जेकरा में तीस हजार रुपया राखल रहे, ढेला समुझि के हमरा के लवटा देले ह। आ अबे चम्मच के चोरी? के विश्वास करी तहरा पर?

दुकानदार बोलल–'सांच के का आंच? रउरा उनकर जेब देख लिहीं। चम्मच होई

त दाम देबि, नाहीं त मिठाइयो के दाम ना लेबि।

अमरनाथ सन्न। काटीं त खून ना निकली। जे अभिये ओकर तीस हजार रुपया लवटा दिहल ह, ओकर जेब के तलाशी लिहल जाउ। ना, ना। दामे दे दिहल जाई त अनुचित होई का? दुकानदारे के बात रहो।

ओही घरी बुढ़वा आगा बढ़ि आइल। बोलल–'हां बचवा! हम एगो चम्मच चोरवले बानी। लऽ।' ऊ चम्मच के टेबुल पर राखि दिहलसि।

काका? अमरनाथ के आंखि आश्चर्य से फाटल रहि गइल। तीस हजार रुपया के चोरी करितऽ त जिनिगी बन जाइत। मुदा ई चम्मच?

–'हां, बचवा! एगो बाची बिया घरे। ओके चम्मच से खात देखे के बड़ लालसा रहे। अबतक एगो चम्मचो के जोगार ना हो सकल हमरा से। जेवना मन के तीस हजार रुपया ना लेबे खातिर मनवले रहलीं हं, ऊ मन स्टील के चम्मच देखिके मनावल ना जा सकल आ हाथ चम्मच सहित जेब में चलि गइल।

काका..., अमरनाथ मेज पर राखल ऊ चम्मच उठवलसि। फेनु दुकानदार के दाम देके नीचे उतरि गइल।

काका आगा आगा आ अमरनाथ पीछा-पीछा। ऊ चुपके से एक डिब्बा बार्ली, एक सेर मिश्री आ ऊहे चम्मच पाछा से आम के टोकरी में राखि के पछुवा गइल।

बुढ़वा अनजान बनल आंसू बहावत, मन के बेबसी के धिक्कारत अपना घर के ओरि चलल जात रहे।

अविश्वास

हम ओकरा के पनरह रुपया देले बानी—ई कहे के पहिले हम अेने-ओने ताकि ले तानी कि कहीं ऊ सुनत ना होखे। ए सन्दर्भ के कहानी बनावतो मन के कउनो कोना में ई इच्छा दबल बा कि ऊ एह कहानी के ना पढ़ि सके। एकरा खातिर हम भगवान से प्रर्थनो कर सकऽतानी।

पनरह रुपया अपना जेब से निकालि के देबे के समय तक हम ओकरा पर अविश्वास ना कइले रहीं। कारणों ना रहे। काहे कि, जइसन कि बतवले रहे, ऊ एगो मेकानिकल इंजीनियर रहे। बिना नोकरी-चाकरी के। बेरोजगार के भीड़ में एगो असहाय आदमी केहू के निगाह ओकरा पर जइबो ना करे। जेकर, बिना इस्तिरी कइल पैंट, नीला रंग के कमीज, एगो फोमवाला कटल-फटल थइला, जेकरा में जरूरे होई ओकर पुरान कपड़ा-लत्ता भा होई सरटिफिकेटन के गोल-गोल बण्डल जेकरा उपरिआवे में चुक गइल होई ओकर माई-बाबू के जवानी भा ओकर बचपन भा ओकर बुढ़िया-बुढ़वन के आस। भा इहो हो सकऽता जे ओकरा में कुछ दाना-चिउरा होखे, जे ओकर सनेहमयी महतारी चलत खा दे देले होखे। बाकिर ना, हम गलत सोचि रहल बानी। अगर कुछ दाना-चिउरा रहित, त दू बजे दिन तक ओकर रूखल-सूखल चेहरा, ओठ पर के पपरी भा भावना-रहित आंखि हमरा आंखि के सामने ना रहित। बाकिर इहो हो सकऽता जे हमार पहिलकिये बात सही होखे। थोरे दाना-चिउरा जदी ऊ भोरहीं खा लिहित, त सांझि खा ओकरा फांका करेके परि जाइत। शायद एही खातिर सहेजि के रखले होखे, ताकि तीन-चार बजे सांझि खा ओके खाके दुपहर आ राति के भोजन के समय पानी-पी-पी के काटि देउ। खैर, बात जे भी होखे, ओकर अवस्था दयनीय रहे, एकर आभास मिलत रहे।

ऊ एने-ओने ताकि लिहलसि। एकाध गो जानकारियो लेले रहे। फेरु हमरा ओरि मुखातिब होके पुछलसि कि हम कलकत्ता त नइखी जा रहल। हम जब ना कहि-दिहलीं, त ऊ बहुते निरास भइल-अइसन भाव ओकर चेहरा पर नाचि उठल। हम सोचे लगलीं—शायद किसमत के मारल होखे। बेरोजगार त होइबे करी। मुदा ई जानिके कि ऊ बेरोजगार मेकानिकल इंजीनियर हऽ, हमरा नस-नस में सिहरन दउरि गइल। दिल्लीवाला हमार फुफुआउत भाई अविनाश के लइका निरंजन मेका. इंजी. हवे आ निमन कमाई करि रहल बाड़े। घर-बाहर के सभ खुश बा ओकरा से। शायद ईहे सोचि के हमहूं अपना बेटा

प्रभुनाथ के मेकानिकल में नाम लिखा देले रहलीं। हमहूं एतना आश्वस्त रहलीं कि आपन प्रभुनाथो पढ़ि-लिखि के निरंजन अइसन खूब कमाई करी, त हम जे रोज-रोज पापड़ बेलि रहल बानी, ओकरा से छुटकारा मिलि जाई। मुदा जबसे हमरा मालूम भइल कि ऊ बेरोजगार युवक मे. ई. हऽ, अइसन लागत रहे कि हमारा नस में खून जम गइल होखे।

लइका-सभ एतना डिगरी बटोरे में अपना उमिर के कतना बड़ हिस्सा जाया कइ दे तारे सऽ, बाकिर हाथ लागऽता कागज के बण्डल, जेकरा के नोकरी देवेवाला सिरिफ देखि के रख देता। सुकर ह कि ऊ एकरा के रद्दी के टोकरी में नइखे डालि देत, काहें कि ऊ सभ डिगिरी के मालिक ओकरा सामने बइठल बा। नाही त हमरा एतना विश्वास बा कि ऊ ई सभ डिगिरी के रद्दी के टोकरी में जरूर डालि दिहित।

ऊ आपन नाम ना बतवलसि। अतना बेबस लागत रहे ऊ कि ई बात हमरा दिमागो में ना रहे। हम ओकर बात ध्यान से सुनलीं। बाकिर सच बात कहीं त ओकर बात ध्यान देके सुने के हमरा पास में धीरजो ना रहे।

बात ई बा कि हम थोड़ा भावुक किसिम के आदमी हईं। केहू के गाड़ी छूटि जाले त हमरा मन के भावुकता के रोकि सकल कठिन हो जाला, सहज ना। फेनु ऊ बेरोजगार मेका. ई. जी. के त सूटकेसो हेरा गइल रहे। साथे-साथ मेहनत परापत भइल सरटिफिकेटन के बण्डल आ जोगाके राखल कुछ रुपयो उठाइगीर के हाथ लागल होई। हमरा सामने बहुते अइसन घटना रहे जवन ऊ बेरोजगार इन्जीनियर के साथ घटल रहे आ ई सब हमार भावना के एक हद तक उभारे में सक्षम रहे। ए खातिर हम वोह युवक के बात पर ध्यान ना दिहलीं। अपना मनी बेग में पड़ल रुपया के मन ही मन गिनती कऽ के आश्वस्त होखल चाहत रहीं कि ओकरा आवश्यकता मुताबिक रुपया दे दिहला पर हमार काम त ना नू रूकी?

कमो पड़ला पर त हम चला लिहतीं। ओकरा कलकत्ता जाये के रहे एगो इन्टरभिउ में। ओकर अदम्य उत्साह, मजिगर तैयारी, जइसन कि हम सोचत रहलीं, फीका पड़ि गइल रहे। काहें कि कलकत्ता पहुंचल अब ओकरा सामर्थ्य के बाहर रहे। एसे शायद ई ऊ तलास में रहे कि केहू मिलो आ ओकरा से ऊ आपन दुख बतावे ताकि कलकत्ता जाये खातिर कुछ जोगाड़ हो सके। काहें कि ओकरा भय रहे, जइसन कि ऊ हमरा से बतवलसि, कि लोग ओकर हालत ना समुझि के ओकरा याचना आ निवेदन के भीख मांगे के एगो मजिगर तरीका ना मान लेसु।

आज अगर सच बोलल जाई त हम ई सब बात सोचलहूं ना रहीं। सोंचली जे ओकरा के पनरह रुपया दे दिहीं ताकी ऊ टिकट कटाके कलकत्ता पहुंचि जाउ, इन्टरभिउ देके एगो अन्तहीन प्रतीक्षा में जुट जाउ।

हम ओकरा के पनरह रुपया दे दिहलीं। कुछऊ कष्ट ना भइल हमरा। बाकिर जब ऊ गाड़ी खुले के समय तक टिकट लेके ना लवटल, त मन के कवनो निरीह कोना में

अविश्वास के फेंड़ जामे लागल। मन के मनवलीं। डंटलीं कि तूं त जे देवे के रहे ऊ देइये दिहलऽ। फेनु ऊ का करी आ कइसे कलकत्ता जाई, इन्टरभिउ में पास होई कि ना–ई सब काहें सोचऽतारऽ। बाकिर मन ना मानल। अपना लड़का प्रभुनाथ के मेका. इंजी. के पढ़ाई आ सम्भावित बेरोजगारी हमरा दिमाग में एह कदर हावी हो गइल रहे कि ऊ बेरोजगार युवक हमरा प्रभुनाथे लागत रहे।

गाड़ी खुले लागलि, त हम आपन बैग उठाके उतरि गइलीं। सोचलीं–देखल जाउ, फेनु ओकरा पर कउनो विपत्ति त ना आ गइल। टिकट-घर के पास अइलीं, त देखलीं कि ऊ एगो नवयुवती संगे हंसि-हंसि के बतिआवत आ बोलत रहे–जे एगो अच्छा उल्लू फंसल रहे।' हम हैरान रहि गइलीं बाकिर–

बाकिर हम कान ना दिहलीं। ओकरा बगल से गुजर गइलीं आ टेशन के बाहरी भीड़ मे खो गयलीं। काहें कि जब हमार भावना आपन खोराक पाके शान्त हो गइल, त हम ना चहलीं कि जाके वोह तथाकथित बेरोजगार मेका. इंजी. के लज्जित करीं आ ऊहो महज पनरह रुपया खातिर। बाकिर ओकर अइसन हरकत हमरा दिमाग में अविश्वास के बीज ना बो दिहलसि? बाकिर ना, हमारे दिमाग अइसन ना ह कि जे-से ओकरा में अविश्वास के बीज बो दिही आ ऊ बीज अंकुरी, फूली आ अविश्वास के विषवृक्ष हमरा जिनिगी के जियहूं लायक ना रहे दिही। हम सांच कहऽतानी आ सांच छोड़ि के अउरो कुछ नइखीं कहत कि ऊ तथाकथित बेरोजगार मेका. इंजी. पर हम रचिको अविश्वास करबे ना कइलीं आ अभिओ नइखीं करत, भले ही ऊ हमरा...।

केहू एगो बेमार

रेलवे के अस्पताल, भट्टाचार्य बाबू के कमरा, ओकरा से निकलत एगो लम्बा लाइन आउर आखिर में खाड़ ऊ। हॉथ में डाक्टर के पुर्जा आउर एगो शीशी। रोअते-रोअते ओकर आंख लाल टेस हो गइल रहे। आंचर से बेरि-बेरि ऊ आपन आंख पोछ लेत रहे। पता ना ओकरा आंख में दहसत काहे समाइल रहे। ओही आंखिन से बरामदा पर बइठल एगो बाबू का ओर तकलस।

भट्टाचार्यी बाबू के ई कमरा, एक्सरा के कमरा ह। शरीर के सब व्यवस्था के लेखा जोखा करत भट्टाचार्यी बाबू आंख पर चढल पतला प्रेम के चश्मा कभी चढ़ावस कभी उतारस कवहीं अपना पहिनल कमीज से पोछ लेत रहस। फेनु कवनो पढ़ावल तोता खानी बोल पड़स–"कपड़े उतारिये। मशीन पर सांस रोककर खड़ा हो जाइए।" फेनू घिर्र घिर्र सधल सधावल आवाज में फेर कहस–"डाक्टर के कमरे में फोटू चला जाएगा। आप कपड़े पहनिये और बाहर जाइए।"

बाबू के एके जगह पर रुकल अच्छा ना लागल। चहलकदमी करे लगलन। सामने आइल डॉ. अरुन्धती के कमरा। ऊ काफी हसमुख बाड़ी। उनका मुस्कुराहट के एतना केप्सूल कवनो बेमार कइसे बर्दास्त करी। उनका त मर्दन के डाक्टर होखे के चाहीं। आउर अब आगे बा डा. विश्वनाथ के कमरा। बिना जल चढ़वले शिवजी डोलवे ना करसु। एक बेर बड़ा साहेब से का झगड़ा भइल कि रावण खानी इनका के एहिजा जे बइठा गइले तब से इ एही जा बाड़न। खाली बइठ के का करिहें–माछी मारेलन आउर आपन बोखार मरीजन पर उतारेलन।

बाबू के साथ के ऊ औरत अउरी सुबुके लागल। आंचर त भींजिए गइल रहे। धड़कन भी कुछ बढ़त बुझाइल। लाइन धीरे धीरे सरकत रहे। ओकर नम्बर चार आदमी के बाद बा ई जान के ओकर रोआई कुछ कम भइल।

ऊ अपना मन में सोचे लागल कि ऊ कइसन अभागिन बिया जे इनका इतना सबकुछ कइला धइला के बादो सुख चैन नइखे। एही छोट उमिर में दू-दू गो सोना अइसन लड़िका, आ ई रोग। पता ना भगवान का करिहन, हमरा ना रहला पर ई कवनो सौतिन के बिठा लिहें त लड़िकन के का होई।

फेरू ऊ अपना मन में सोचे लागल जे उ कइसन पागल बिआ जे ई सब बात सोचत बिआ। काल्हे त ई डाक्टर के देखावे के कहले रहले। समूचे शरीर के दरद लम्बा खांसी आ थूक में लाली। इ सब त 10-15 गो सूइये आ थोड़की सा दवाई खइला के बादे ठीक हो जाई।

आज त ई अपने रिक्सा बोला के ले अइलन, जेकरा पर हमरा के भेज के अपने पैदल अइलन हऽ। का जाने काहे साथे ना अइलन ह। रेक्सा में त ढेर जगह रहे जेमे दू गो आदमी आंट जाइत।–शायद ई जानत बाड़े कि हमारा कौन बेमारी बा। आ जदि ई जानते बाड़न त लड़िकन के काहे होम करत बाड़न।

ओकर रोआई रुकत ना रहे। इहे सभ-सोचत जात रहे आ रोवत जात रहे। एही बीचे भट्टाचार्यी बाबू आपन चश्मा पोछत ओकरा लगे आ के कहले "बेटी, काहे रोती है, तुमको कुछ हुआ तो नहीं लगता है। डाक्टर तो सबकी जांच करता है। बगल के कमरे में ज़ाकर कपड़े बदल लो। फिर मशीन पर खड़ी हो जाना।"

बगल के कमरा में सूत के अरगनी पर लटकल चमगादड़न अइसन एम॰ एम॰ आर एक्सरे के प्लेट रहे। उ डर गइलि। फेनु रोये लागलि। एह पर भट्टाचार्यी बाबू झुंझला गइले। दोसरा मरीज के ओर देखत बोललन–तुम काहे टुकुर-टुकुर ताक रहे हो, जबतक वह तैयार होती है, तुम ही कमीज खोल कर मशीन पर खड़ा हो जाओ।

एही बीच ऊ तैयार होके आइलि आ मशीन पर खाड़ हो गइलि। भट्टाचार्यी बाबू एगो नम्बर लगवलन आ क्लिक-घिर्र-घिर्र...! "हो गया" कह के ओकरा के मशीन पर से उतार दिहलन।" जाओ बाहर बैठ कर रोओ धोवो, बाबा रे बाबा, तुमको तो कुछ नहीं होगा हमारा अभी बारह बज जायेगा। कतार है कि खत्म होने का नाम नहीं।

बाबू अबहियों घूमत रहन। इ जांच घर ह। आपरेशन थियेटर त नयका घर में चल गइल बा। ओहिजा नयका डिस्पेन्सरी बा जहां दवाई बांटल जाला। पुर्जा दीं–दवाई लीं। वर्मा बाबू चश्मा के नीचे से झाकेले। मर्दन के खिड़की का ओर उनकर ध्यान तऽ जइबे ना करे। दाहिना तरफ औरतन के खिड़की बा ऊ ओहिजा खाड़ होके लवंग चबात रहेले आ मिचिर-मिचिर बतिया बतिया के दवाई बांटेले।

ओकरा लागल जे कम्पाउण्डर बाबू भट्टाचार्यो बाबू सभे बेमार बा। एक तरह से देखल जाव त पूरा अस्पताले बेमार बा। डॉ॰ अरुन्धती आ डॉ॰ विश्वनाथ के भी निरोग ना कहल जा सकेला। एकाएक जइसे ई सब देख के ओकरा लागल जे ओकर मेहरारु सबका से निमन आ निरोग बिया। रेक्सा पर दूनो जना सवार होके रेक्सा वाला के कहलन–"चलो घर चलें।"

ग्रहन

ग्रहन तीन तरह के होला–सूर्यग्रहन, चन्द्रग्रहन आ पानिग्रहन। भूगोल के जानेवाला बतावेलन जे सूर्यग्रहन आ चन्द्रग्रहन के होखे खातिर एगो सूरज होला, एगो चांद होला आ होखेली एगो पृथ्वी, जे फेरा लगाके कबो सूरज आ चांद का बीचे आ जाले, त कबो चांद के अपना आ सूरज के बीच बइठा लेले। बस लागि जाला ग्रहन–कबो सूरज के कबो चांद के। नजर नाहीं लागे रामा का कजरी अलापेवालन के कवनो बस ना चले। ग्रहन लागिये जाला। सांस्कृतिक इतिहास के पढ़े-पढ़ावेवाला ई ग्रहन के राहु आ केतु के करिश्मा मानेलन। जेकर गला कटि जाई भा काट दिहल जाई त ऊ का छोड़ि दिही? हावी होइये जाई नू।

पानिग्रहन के कथा त अजगुत था। एह में एक अदद बाप आ एक अदद लइकी–घुंघटा में लुकाइल अउर तिलक-दहेज का भार से दबल, झुकल, बइठल। बाप खातिर भार, लड़का खातिर स्वीकार। काहें कि लइकी काफी धन-दउलत लेले आवे ले। पंडितजी मंत्र पढ़ेलन आ बाबूजी अपना बेटी के हाथ दुल्हा का हाथ में दे देले। इहे कहाला पानिग्रहन संस्कार। जे कबो सुखी जीवन के शुरुआत के सूचक रहे बाकिर आजुकाल त बदकिस्मती के शुरुआत बुझाला। यानी ग्रहन लागि जाला लइकी के किस्मत में। सूर्यग्रहन-चन्द्रग्रहन लगला से कवनो फलाफल होखत होई, बाकिर बुझाला ना। पानिग्रहन लगला से लइकी, लइकी के बाप घर, समाज सभ के बुझाला। जन्मकुंडली मे तिलक-दहेज वाला घर में अधिका से कम दिआइल कि शुरू हो जाला करकरहट।

लइका तब तक पानि-ग्रहन खातिर मांड़ो में ना ले आवल जाला, जब तक ओकर बाप तिलक-दहेजवाला जनमकुंडली के घर भर ना जाला देखिके आश्वस्त ना होला। ओकरा बादो जदी कमी होला भा कम बुझाला त, लइकी के खैर ना होला। जला दिहल जाले भा एतना दुख दिहल जाला सास-ससुर द्वारा कि ऊ आतमहतेया करि लेलीं। एह तरह पानिग्रहन में ग्रहन लागि जाला। नियम कानून के धरे पकड़ेवाला टुकुर-टुकुर ताकत रह जाले। एतना बड़ दुर्घटना एगो सनसनीखेज घटना बनि के रह जाले आ कबो-कबो अखबारो में स्थान पा लेले।

त हम बतावत रहलीं ह पानिग्रहन के करिश्मा जे अनुभवी बापन द्वारा कइल जाला आ जेकरा मूल मे होला–लालच तिलक-दहेज के, जेकरा सामने कमासुत लइकियो के कवनो कीमत ना आंकल जाला। कहल गइल ह जे युद्ध आ परेम में सब कुछ माफ

रहेला। कुछऊ कइल जा सकेला। अदिमी आपन करतब से खूब ऊपर उठि जासु भा नीचे गिरि आवसु—ओकर धेयान रही विजय पर—युद्ध में विजय होखो भा परेम पर, जेकरा के पा लिहल ओकर लक्ष्य होला। पानिग्रहनो के कुछ इहे अन्दाज होला। लइकन के बाप कवनो तरह बेसी से बेसी धन-दउलत तिलक-दहेज से मिल जाव सोचत-सोचत गलत-सही कवनो राह अपना सकेले। लइकी के बाप गरीब बाड़े त ओकरा का। ऊ काहें सोंची? भले ऊ बदमासन के सहयोग लिही। मइला पर रखल हीरा उठावे में ओकरा कवन संकोच। ओकर इज्जत कौड़ी के तीन हो जाई, पर घर त भर जाई नू।

एगो मजिगर किस्सा बा। एगो अदिमी अपना लोभ-लालच में कौड़ी के तीन हो गइल। कहानी बिहार के एगो जिला बा जहां के लोग अपना बेटी के बियाह खातिर दोसरा जगह के लइका के अपहरण क लिहलन भा गुण्डा-बदमास के रुपया देके लइका के उठवा लिहन स आ शादी कइके लइका-लइकिन के ओकरा घरे पहुंचा देलन स। बाकिर अपना लइका के बियाहे में ऊहो सेर होलन स। लोभ-लालच एतना कि भले ऊ कौड़ी के तीन हो जासु बाकिर लइका पर धन बटोरे में कमी काहे होखे देसु।

ओही जिला-शंहर के एगो महल्ला के एगो अदिमी अपना कचपढुआ बाकिर कमाऊ बेटा के तिलक पचीस हजार तय कइलस। छेंको-बरेच्छा हो गइल। लइकीवाला के तकरीबन दू हजार रुपया खरचो हो गइल रहे। बरिआत के सुवागत खातिर लड़की के बाप तइयारी करत रहले कि उनका पर वज्र टूट के आ गिरल।

खबर मिलल लइका के बाप एगो अंकेक्षक का अंकन के जाल में अझुरा गइल बाड़े। चालीस हजार तिलका मिली। पहिलका कन्या पक्ष आपन दोसर दुआर देखो। हाथ आवत लछमी के कइसे ठुकरावल जाउ।

लइकीवाला के काटीं त खून ना। का करे अब ऊ? गइल ऊ शहर के विरादरीवालन से गुहार-मनुहार करे खातिर। अंकेक्षक का सामने ऊ बातो ना करि सके। बेटी के हाथ पियर करे खातिर ऊ आपन बचल-खुचल जमीन गिरवी राखि देले रहे।

ई जिला एगो अजीब जिला बा। इहां ना त कवनो काम समय पर होला, अउर ना सही ढंग से। बात विरादरी के होखो भा ग्राम—पंचायत के। बहुते मनावन के बाद बिरादरीवाला अंकेक्षक के दुआर पर जाये खातिर राजी भइलन। गइलन आ ई आश्वासन के साथ बहुरि अइलन कि काल्ह लइका के बाप का दालान पर बइठका होई आ दूनो पक्ष के बात सुनि के फैसला दिहल जाई। एह बीच लइका आ लइका के बाप दूनो जने अंकेक्षक के दरवाजा पर पहुंच गइल रहले, बाकिर ऊ लोग के लवटे के पड़ल, कारण शादी त अब बइठका के बादे होखे के तय भ गइल रहे।

बिरादरी वाला खुश रहले कि उनकर बात मान लिहल गइल। काल्हु बइठका होई त कहां जइहें ई लइका के बाप। सब धोवचट निकालि देवि। बाकिर फजिर खा जब लइका के बाप पियर धोती पेन्हले बस-अड्डा पर उतरिके घर के ओर रास्ता कइलन कि

शादी हो गइल, शादी हो गइल के खबर सउंसे महाला में फइलत देर ना लागल।

सांझ खा बइठका रहे। 'का वर्षा जब कृषि सुखानी—वाली बात रहे। अब विरादरीवालन का सामने। ओकरो ऊपर लइका के बाप एगो शातिर बदमाश के तीन हजार रुपया देके पटा लेले रहे कि ऊ पंचायत ना होखे देइ आ पंचायत में आवेवालन के गाली-गलौज मार—पीट क के भगा देइ।

लइका के बाप के चालाकी चल जाइत, जदी खबर बिरादरी के मुखिया के ना मिलित। मुखियबो घाघ रहे। ऊ एगो वोह बदमाश से बड़हन बदमाश के ई दिलासा देके बुला लिहलस कि पंचैती में जे भी जुरमाना के रकम होई, सब ओकरे होई आ इहो कि जुरमाना के रकम उहे तय करी। एगो अदिमी त इहो बतवलस कि पहिलका बदमाश जेकरा के लइका के बाप ठीक कइले रहे दुसरका बदमाश जेकरा के मुखिया ठीक कइले रहलन, के बेटा रहे आ जब जहां बाप मयदान में बा का करे जाई। लड़ाई बाप अउर बेटा के रहे। कांटा के लड़ाई रहे, बाकिर पहिलका बदमाश ना आइल। पइसा त ऊ पहिलही ले लेले रहे। सब रकम डकार गइल रहे ऊ।

पंचायत बइठल! तू-तू मैं-मैं भइल। आखिर लइका के बाप के जुरमाना के रकम सुनावल गइल—सात हजार रुपया। तीन हजार त ऊ पहिलका गुण्डा के दे देले रहल। ऊपर से सात हजार के लपेट अउरी बइठल।

अंकेक्षक त अउरो घाघ निकलले। दुनों गुण्डनों से बड़हन गुण्डा। आश्वासन देले रहले चालीस हजार के, देले दस हजार। भइल विआह मोर करबे का वाली बात हो गइल। ऊहे दस हजार लइका के बाप दे दिवा के जान छोड़वलस। पास में बांचल इचिको ना। हो गइलन कौड़ी के तीन। कुछ भेटइबों ना कइल आ निनान भइल अलगा से। जातियो-बिरादरी में सम्मान घटल आ भय हो गइल कि गुण्डवो गाहे-बेगाहे तंग करी आ रंगदारी टैक्स वसूल करी। जान सांसत में परि गइल बा।

पानि-ग्रहन लागेला त अइसने कुछ होला। ई ग्रहण अरमानन के मटियामेट करि देला। जब ई ग्रहण लागेला—त केकरो शुक्र तेजहीन हो जाला आ मंगल करिआ लुआठी। अरमानन के होली जलावल जाला, विश्वसता के जनाजा निकालल जाला। दूगो दिलो जुड़ेला बाकिर बीच में एगो गांठ पड़ि जाला अउर इहे गांठ कलछुल से कलम तक चलावे वाली लइकिन का भाग्य के नासूर हो जाला। जे कबो ना कबो फटि पड़ेला स्टोव नियन। बहू जला दिहल जाले आ लइकी जल मरेले।

बाकिर युद्ध आ परेम में सब कुछ माफ बा। शादियो में । रउआ त जानते होखब—लटपट शादी खट बेबहार। त ग्रहन लागला के एतना करकरहट काहे? ओ! रउरा घरे ग्रहन लागल बा! सेहे त कहीं। कबनो वेबंत ना लागल होई, तबे नू।

गुलछर्रा

जेकरा आवते देखि के रउवा के बुझाये लागे कि दाल में कुछउ करिया बाटे भा जेकरा देखि के नागफनी के फूलवो में पिचकारी लागि जाइ आ दनादन रंग छूटे लागे भा जूता के तल्ला देखवला पर जेकर आंख लाल-पीयर होखे लागे, त रउआ जानि लीं कि ऊ अदिमी ना हऽ, गुस्ताख हऽ गुस्ताख। जे आपन आंखि पर चश्मा लगवले रउए दिस ताकि रहल बाटे। ई सब कुछ खा सकेलन, पान छोड़ि के, ई बात हम बिसवास के साथ कह सकीला। कारण कि जदी ई पान खइतन, त आपन पिचकल गाल में पान के कई गो गिलौरी दाबि के आपन फोटो खिंचवइतन।

ऊपर लिखल सब बात अगर-मगर के बात हवे, काहे कि रउआ आवत देखबि तबे नू। खैर, रउआ उनका के देखल चाहतानी तऽ हमार सलाह होई जे पश्चिम बंग भोजपुरी परिषद् द्वारा प्रकाशित आ 'गुस्ताख' द्वारा लिखित किताब 'गुलछर्रा' देखि लीं जेकरा मे एगो फोटो छपल बा। ओह फोटो के नीचा मे लिखल बा–रघुनाथ प्रसाद 'गुस्ताख'। ई हउवन 'गुलछर्रा' के कवि आउर खुद आपन परिचयकार। इनकर यथा नाम तथा गुस्ताखीं देखीं जे ई आपन जन्मकाल दोसरका विश्वयुद्ध के पहिले आउर मरनकाल तिसरका विश्वयुद्ध के बाद बतवले बाड़न।

जदि राउर इतिहास के ज्ञान अधकांच नइखे, त रउआ जरूरे जानत होखब कि पहिलका विश्वयुद्ध 1914 ई. में आउर दोसरका 1939 ई. में भइल रहे। त एकर अर्थ ई भइल कि गुस्ताख 1914 आउर 1939 ई. के बीच कवनो ई. सन् में ऊ 48 वर्ष से 73 वर्ष का बीच में क़इयो साल के हो सकेलन, मुदा इनकर फोटो देखि के रउआ बूझीं कि उनका बात में कतना गुस्ताखी बा आउर कतना सच बा।

अब देखीं जा उनकर काइयांपन कि ई आपन मृत्युकाल के भविष्यवाणी तिसरका विश्वयुद्ध का बाद कइले बाड़न। हमारा खेयाल में ई अनन्तकाल के बराबर होई। रउआ आश्चर्य जनि करीं। दू-दू विश्वयुद्ध भुगतला के बाद मानवता के धरोहर का रूप में अइसन कुछ बचल नइखे जे रउवा तिसरका विश्वयुद्ध ठानि के ओकरा हासिल करबि। फेनु देस विदेस के महापुरुष लोकनि सं तिसरका विश्वयुद्ध ना होखे एह खातिर आकास-पाताल एक करि रहल बाड़न। हमहूं बिसवास करीला जे लोग में एतना अकिल बाकी बाटे जे ऊ तिसरका विश्वयुद्ध ना होखे दीहें आ तिसरका विश्वयुद्ध ना होई त

'गुस्ताख' ना मरी। 'गुस्ताख' के मारे खातिर के बुड़बकहा तिसरका विश्वयुद्ध का रंग-मंच सजाई।

गुस्ताख का कथनी भा करनी में अन्तर बा। युद्ध का पहिलका युद्ध का बाद जइसन बातन में उलझावे वाला गुस्ताख का आपन जीवन युद्धे रहल ह–हरेक फ्रन्ट पर। परिवारिक होखो भा वैयक्तिक, आर्थिक होखो भा सामाजिक–हरेक स्तर पर ई युद्ध जीयले बाड़न आउर अभीओ जी रहल बाड़न। बाकिर देखीं इनकर गुस्ताखी जे युद्ध ई जी रहल बाड़न आउर परिणाम हम सब भुगत रहल बानी। आपन कलम के बनूक बना के जब ई गोला छोड़ेलन, तब आपन अस्मिता बचावे खातिर हमनियों का ठहाका के बम गोला छोड़े के पड़ेला। इनकर खुशफहमी देखीं जा जे ई आपन गोला के गुलछर्रा कहऽताड़न, जे कहला से इनकर स्वास्थ पर त कवनो असर ना पड़ी, बाकिर हमनी सब के स्वास्थ पर जरूर पड़ी।

'गुलछर्रा' गुस्ताख का अट्ठाइस गुस्ताखी के संग्रह बा जेकरा के पश्चिम बंग भोजपुरी परिषद् एह खातिर परकासित करिके बंटववले बा जे गुस्ताख हुनकरो से गुस्ताखी ना करे लागो।

गुस्ताख का पहिलका गुस्ताखी के शिकार भइल बाड़ी–रेल, जहां हम काम कर रहल बानी। एही खातिर हम गुस्ताख से बहुते नाराज बानी आउर नाराजगी जतावे खातिर गुस्ताख के बखिया उधेर रहल बानी। देखीं जा इनकर गुस्ताखी–

'अप' लाइन से तू 'डाउन' पर जब मन में आवे चढ़ जालू
आगा के कवनो गाड़ी से सांढ़ क अइसन तू लड़ जालू
बन जालन बैगन के चोखा डब्बा भीतर ठूंसल प्रानी
हे भारत के रेल भवानी

अइसन वीभत्स दृश्य के कल्पना कर सकीला रउआ? ना नूं। बाकिर गुस्ताख कइले बाड़न आउर हमार विश्वास बा कि ऊ ई लिखि के हंसलो होइहें ठहाका मारि के। कारण कि गुलछर्रा के अन्तिम छर्रा छोड़े में ऊ ई चौकड़ी भरले बाड़न जे दस हजार से अधिका रन बनावे वाला गावस्कर के गेंद के चउका-छक्का बनल भुला जाई। अब देखीं जा जे चार के चौकड़ी होला आ गुस्ताख साहेब चौकड़ी शीर्षक अन्तिम गुस्ताखी में पांच गो चौकड़ी देले बाड़न–एक से एक नीमन। एगो बानगी देखीं जा–**केहू रो के, केहू गा के काटे / केहू बइठल फिलासफी छांटे / छीलि के अन्त में ना कुछ भेंटी / जिनगी छिलका पियाज के बाटे**

गुस्ताख के गुस्ताखी उनकर कविता में ही ना, जीवनो बा। एगो बियाह कइल, त श्रीमती जी उनका के अंगूठा दिखा के स्वर्ग सिधार गइलीं आउर दोसरकी कनियां अइलीं, त गुस्ताख सबका के अंगूठा दिखा रहल बाड़न लिखि के ससुरारी से सम्बन्धित कविता। देखल जाय–ई आपने गुलछर्रा में शामिल कइले बाड़न : नवकी दुल्हनियां, हमार ससुरार,

कुछऊ, बसन्त के खोज, होरी, नारी के नाड़ी आउर इहां तक कि दहेज के दलाल भी। एह में इनकर गुस्ताखी देखीं जे रउओ के इनकर ससुरारी के इतिहास-भूगोल सब इयाद हो जाई। देखीं, ई कहऽताड़न–**गउआं में होई रितु-बसन्त / कन-कन में फागुन के बहार / ई शहर में का खोजले बाड़ऽ / पागल बा का माथा तोहार।**

खोजे के खातिर त ससुरारी के गांव जाए के होई, बाकिर नवकी दुल्हनियां के छवि इयाद क के गुस्ताख का दड़ा डर लागेला–

ना घूंघटा ना खोइछे बाटे ना चूड़ी ना नथिया
अंखिया पर चमकत बा चश्मा पाउडर मलल सुरतिया
हथवा में बा चाम के थैली ओहि में भरल फुटनिया
नवकी दुल्हनियां

केतना इनकर ससुरारी के छिलका उतारल जाव, अब ई अपने कहले बाड़े–

पहिल-पहिल हम ससुर के आपन जइसे पवतग्गी कइनी
सदा सोहागिन रहऽ ए बेटी उनका मुंह से वर पइनी
मन तऽ अगुताहे बा उनकर अकिलो आंख के सूरे बा

ई अपने गुस्ताखी के पियाज से तुलना कइले बाड़न जे जेतना मन चाहे छिलका उतारते जाईं बाकिर कहीं कुछ मिली ना। मुदा इहो सच बा जे छिलका उतारत कबो आंखि में लोर आ जाला त कबो मजिगर सब्जी भा मांस के इयाद क के मुसुकियाये के मन हो जाला। देखी एगो छिलका के मजा–

अदालत के आंगन में मच्छर आठ आना में भाला से मारि देले बाड़े पासे-पड़ोसिया बाद के गवाही देवे खातिर तइयार कइले रहन। अब उनका बुझाइल जे–

बुझलीं जेकरा नीक पड़ोसिया ऊ नमरी बलवाई निकलल
धूर आंखि में झोंके वाला टीसन के हलुवाई निकलल

ढेर मजिगर रचना संजोवल बाड़ी सं एह गुलछर्रा में। लखात बा गुल जइसन बाकिर चोट करत बा छर्रा अइसन। हम बिना संकोच के कह सकीला जे अइसन मजिगर व्यंग्य रचना बिना कवनो भूल-भाल के गुस्ताखे जी कर सकऽताड़न। हमार ई मतलब नइखे कि अइसन कविता केहू ना लिखि सके। केहू छन्द शास्त्र के कसौटी पर तरासल रचना लिखी बाकिर ओह रचना में व्यंग्य त ना होई। हां, हास्य हो सकेला, त उहो अधम हास्य। गुस्ताख के व्यंग्य-रचना सब तरे पूर्ण बाड़ी सं। पढ़ीं। ठठा के हंसी। दोसरा के सुनाईं। ठठा के हंसी। फेनु जब ऊ हंसे, त ठठाइ के ओकर साथ दिहीं। बाकिर देखबि, छिलके उतारे में जनि रहब। ओकर मजा लेवे खातिर ओकरा भानस घर में जाए देब आउर बहरी से गुस्ताख का ससुरारी वाली कविता सुनाईं आउर देखीं मजा।

लोढ़ा

विन्ध्याचल का पहाड़ी पर बहुत लोढ़ा पावल जाला, बाकिर ऊ एगो लोढ़ा जे कवनो कोना-अतरा अलग-थलग पड़ल रहऽता, अपन तमाम गुणन के बावजूद केकरा के कब आकर्षित कर पावेला? ओकर गुणवत्ता में कवनो कमी नइखे, बाकिर नजर से ओझल रहला के कारण केकरो ओकर इयत्ता के ध्यान ना रहेला।

कुछ अइसने बात रामजी पाण्डेय 'अकेला' में बाटे। जी. पी. श्रीवास्तव, हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, के. पी. सक्सेना आउर इनकर जइसन नामधारी व्यंग्यकारन का पांत में रामजी पाण्डेय 'अकेला' के खोजलो पर रउआ ना पा सकीले। बाकिर एकर कारण ई कदापि सोचल ना जा सकेला कि 'अकेला' भोजपुरी भाषा के व्यंग्यकार हवन आउर ई सब नामवर व्यंग्यकारन से कम तीखा व्यंग्य-वाण के वर्षा करेलन। भोजपुरी का व्यंग्यकारन में शीर्षस्थ पांत में 'अकेला' जी अकेले बाड़न। ई बात बड़बोलापन ना कहल जा सके, काहे कि रउओ त 'भोजपुरी माटी' का माध्यम से इनकर व्यंग्य-वाण के मार सहले होखब।

ई बात समझे के बा कि कवन कारण बा जे रचनाकार के व्यंग्यकार बना देले। व्यंग्य अपने आप में त कवनो साहित्यिक विधा ना ह। कहानी, नाटक, उपन्यास भा कविता लिखेलन स रचनाकार। परसाई भा शरद जोशी कहानी-निबंध लिखताड़न। हुल्लड़ मुरादाबादी कविता लिखले बाड़न। 'अकेला' भी बहुते भोजपुरी कहानी लिखले बाड़न जेकर हिन्दी अनुवाद कई एक गो पत्र-पत्रिकन में छपल बा। इनकर कवितो सामयिक आ मौजूं होली सन। तबे एह सब रचनाकार के व्यंग्यकार काहे ना कहल जाला? हमरा विचार से व्यंग्य एगो स्पिरिट बा, जेकर दायरा विस्तृत होला आ ई सब विधा के रचनन में प्रवेश क के आपन रंग देखा देला।

कथानक रहस्यमय होखल जात होखे, अभिव्यक्ति के तल्खियत पाठक के उबा देले होखे भा छोट-छोट खुशी का सपाटबयानी से ओकर सौन्दर्य बिगाड़ल जा रहल होखे, तब व्यंग्य के एक हलुक फुहार पाठक के मन-प्राण के बांधि लेला अऊर पाठक मुस्कियाए लागला। पाठक रचना के तबे अच्छा मानेलन आ रचनाकार के अच्छा रचनाकार।

ई जरूरी बा कि अब हास्य अउर व्यंग्य पर बात कइल जाव। बाद में 'अकेला' का कथा-रचना पर भी। तबे नू ई व्यंग्य-कथा लेखक का संपूर्णता में जानकारी मिल सकेला।

अकेला जी अपना कहनियन में जे व्यंग्य के संपुट लगवले बाड़न, ऊ बहुते प्रशंसनीय बा। सीधा-सादा रचना भी जलेबी का माफिक रसदार हो गइल बा। ग्रामीण परिवेश के अनुभव सजवले बाड़न अकेला जी कि ओके कागज पर उतारे खातिर एगो बड़हन कैनवास चाहीं। फेरू इनका पास त ग्रामीण जीवन के यथार्थ के मूर्त, जीवन्त आउर आपन बनावे वाला स्पन्दनयुक्त भाषा बाटे। मानव-मन का गांठ के खोलि के रख देवे वाला भोजपुरी भाषा में बहुते मुहावरा-कहाउत-लोकोक्ति बिया जेकर प्रयोग कऽके अकेला जी व्यंग्य-वाण छोड़ले बाड़न आउर आपन अपराजेय जिन्दादिली के प्रमाण देले बाड़न।

हास्य आउर व्यंग्य में अन्तर होला। जब केकरो बात पर रउआ ठठाय के हंसि देबि, तबे ऊ हास्य आउर जब मन्द-मन्द मुसुकी मारे लागब, त ऊ व्यंग्य होला। अकेला के कथा-संसार, जे गांवसे चलिके शहर का विद्यालय तक भा फेनु जनता सैलून तक जाके खतम हो जाला, अप्रतिम बाटे। काहे कि इनिका रचना में हास्य का अपेक्षा व्यंग्य जेयादा मुखर भइल बाटे। ई ना ह कि ऊ हास्य लिखलासे बचल बाड़न। ऊ हास्य के सृष्टि कइले बाड़न, बाकिर ऊ हास्य उद्देश्यपूर्ण बा। रउरा ओकरा के हंसि के ना उड़ा दे सकीला। गांव-घर में प्रचलित रुढ़ि का अन्तर्विरोध के तर्कपूर्ण उद्‌घाटन कऽ के एगो व्यंग्य-उद्देश्य के पूर्ति करेला। उद्देश्यपूर्ण हास्य जनसाधारण के प्रति करुणा आउर व्यवस्था का प्रति आक्रोश पैदा करेले।

एगो बात अउरो गौर करे के बा। उच्च वर्ग खातिर निम्नवर्ग, स्त्री, साला, हास्य के विषय बा, बाकिर रामजी पांडेय 'अकेला' छिछला हास्य से बचल बाड़न। उनकर पात्र अपनहीं परिवेश के बा। दुखी मिसिर होखसु भा जीतन चाचा, अफीमची भाई होखीं भा बैजनाथ चाचा, इहां तक कि कर्नल घोष भा जनता सैलून बक्सर का जमुना जे पागल हो रहल बाड़े-सब अकेला जी के ग्रामीण परिवेश के पात्र हवे जिनकर निरीहता, बेबसी, मजबूरी क देला। 'सात हाथ के लाठी लेके लगे छरकेले, चाहे आगा के खूंटा लउको भा मति लउको'—कहि के कथाकार अपना पात्रन का व्यग्रता पर मुसुकियावे खातिर बाध्य करि देले बाड़े पाठकन के।

अरे, एगो बात त हम रउआ के नइखीं बतवले आ लगलीं बात बनावे। अकेलाजी का पहिल व्यंग्यकथा का संग्रह के नाम **'लोढ़ा'** ह। एही नाम से पहिल कहानी के अलावा ई संग्रह में पनरह गो भोजपुरी कहानी से संग्रहित बिया जे एक से बढ़िके एक बाड़ी सं। समय-समय पर अनेकन पतरिका में छपल आउर आकाशवाणी से प्रसारित होखे का पहिलही अकेला जी का ई कहानी चर्चित हो चुकल बाड़ी। फेनु इनकर बहुते अप्रकाशित भोजपुरी कहानी कवनो 'सिलवट' नाम का संग्रह के प्रतीक्षा में पड़ल बा। जेकरा समय-समय पर 'भोजपुरी माटी' भोजपुरी पत्रिका से छापिके सभाजीत जी मिश्रा जोगार बइठा रहल बाड़न कि 'सिलवट' छपो।

गांव से शहर आइल आ इहवें बस गइल लोग अकेला जी के गंवई मानेलन। काहे कि इनकर व्यंग्य कैमरा गांवे के इर्द-गिर्द घूमऽता। 'लोढ़ा' कहानी का अफीमची भाई के 'रेंड़' का फेड़ एके छेव में काटि के भुइयां गिरा देवे वाला' सिपाही का माफिक बेटा चाहे के भूत सवार हो गइल, त जोड़ी लागल बैजनाथ चाचा से (कनई कहानी) जे जीवन भर खेते-खेते, बधारे-बधारे घूमत रहले, बाकिर कनई काढ़ल केकरा कहल जाला, जानि ना पवले, अइसने लोग चना के पौधा देखिके पूछि बइठेलन कि हं हो, ई कवन चीज के फेंड़ लागल बा।

जीतन चाचा जब ट्रैक्टर के दाम हर केहू के बतावत-बतावत थाकि गइलन, त समूचा गांव का एक बार फेरु बटुरा के अन्तिम बार ओकर दाम हर केहू के बता देवे खातिर कुइयां में कूदि गइलन, त मड़ई उठावे के बहाना अपनहीं भाई से लाठी-लठउवल शुरू क देवे वाला धर्मदेव भइया का समय-बोध से चमत्कृत रहि जाय के पड़ेले जइसन ऊ खुलासा कहेलन—

"एह तरी केहू आवते ना रहल हा। जब दूनो भाई लाठी प लाठी खटखटलीं हं जा, त देखलऽ हा नू, कइसन तहरो घाम-बतास ना लागल हा। ना त लिया आवत रहनी ह त तहरो लुके नू लागत रहल हा। त काहें एही बेरा उठि अइलऽ हा"—तब सब रहस्य खुलि जाले आउर लोग चुपे-चुपे मुस्कियाए लागेलन स।

आन्हर दुखी मिसिर के प्राणमोह आउर चनरमा सिंह के 'मरखहवा भइंसा' पढ़ि के दुखी मिसिर का दुख में हंसे के जी करे लागऽता आउर घटना के आंखिन देखल हाल एह कदर प्रस्तुत कइल गइल बा कि शक होला जे अकेला जी घटना के चश्मदीद गवाह बाड़न भा चनरमा सिंह का रूप में अकेला जी खुदे बाड़न—ई पाठकन के विश्वास होखे लागऽता।

ई सब ग्रामीण परिवेश का पात्रन का बाद लखेदन पंडित (विलायती कुकुर) जे गांव आ शहर के मिलल-जुलल उपज बाड़न, जमुना (जमुना सैलून) जे गांव में दाढ़ी-हजामत बनावते-बनावत शहर में सैलून खोलि के बइठ गइल बाड़े भा फेनु कर्नेली से रिटायर होखल कर्नल घोष (इहे नाम कहानी) जे घूस ना लिहले बाकिर देवे का मजबूरी के पश्चाताप का आगि में झुलसत बाड़े अकेलाजी के शहरी परिवेश वाला पात्र हवन जिनका से अकेला जी का साक्षात्कार सहर अइला पर भइल बा। एकरा से पहिले सहर जाके पढ़ेवाला लखेदन पंडित आउर घर-घर घूमत जमुना नाई का अस्तित्व पर उनुकर व्यंग्य-दृष्टि ना पड़ल रहे।

'लोढ़ा' संग्रह के सभे कहानी अकेला जी का ग्रामीण परिवेश से दू-दू हाथ कइलाके उपज मानल जाई, गांव से बाहर अइला पर जब ऊ शहर के साक्षात्कार कइलन कौलेज जाके नौलेज का जुगार में लगलन, तब सहर में पलेवाला वैषम्य का विवशता के आस्वाद चखलन आउर तबे जे कहानी कागज का पन्ना पर उतरल ऊ सब संस्मरण होके रह गइल बाड़ी स। ई संग्रह का कम-से-कम चार ठो कहानी के एही श्रेणी में राखलजा

सकऽता। बाकिर इहो कहानियन में जे तल्खियत बा, जे व्यंग्य के संपुट बा ऊ पाठकन के बांधिके रखे में समर्थ बा। अगर अकेलाजी ई कहानियन के अपन छात्रजीवन का परिवेस से ना जोड़ले रहिते, त रउआ एकरा के संस्मरण कहे के भूल ना करितीं। बाकिर संस्मरणों एगो कहानी ह जेकरा के खुदे भोगल जाला आउर पन्ना पर उतारल जाला, ताकि दोसर लोग एकरा के पढ़ि के सीख ग्रहण करो।

'छूटल काम बदाशाहो से ना होखे' में कथाकार अपन विवसता के इजहार कइले बाड़े, काहे कि एक बार पढ़ाई छोड़ि के नौकरी पर लगला के बाद केहू बिरले ही पढ़ि पावेला। बाकिर अकेला जी खुद नौकरी करत-करत भूगोल में एम. ए. के उपाधि लेके एह मुहावरा के झुठलवले बाड़े। हां, प्रोफेसर ना हो सकले। बाकिर प्रोफेसर होखल कवनो बड़हन काम ना ह। काम ह प्रोफेसर होखे खातिर योग्यता प्राप्त क के आउर योग्यता के बरकरार राखे के।

'महड़उरा' कहानी में मेला घूमेवाला अकेला जी खुद हंसी के पात्र बन गइलन, जब मेला के मेनका उनकर मित्र के भउजाई निकललि। आपन सहकर्मी बाकिर हरहमेश काम से भागेवाला 'नेताजी बहारन राम' के फींच के राखि देले बाड़े अकेलाजी। अंग्रेजी पढ़े के विवसता, उच्चारण-भेद आउर बक्सर हाई स्कूल के माहटरन के रोजनामचा इनका से 'किटी' कहानी लिखववले बाड़े जे वास्तव में 'सिटी' के पर्याय बा। फेरु 'तब आ अब' में प्राचार्य महोदय के आंख बदले के कमाल पर अकेला जी आपन अतीत के दुहरावेलन, पर गुत्थी के नइखे सुलझा पवले।

ई पांच ठो कहानी के अतिरिक्त तीनगो अउरो कहानी बाड़ी सन 'लोढ़ा' में जेकर चरितनायक हमार बीच के बाड़न-'सवति, नांव दुर्गति आउर बसरोपन उपधिया। 'सवति' में एक पुरुष का दू ठो जोरू के बीच क अन्तर्दाह के अध्याय बा, त नांवे दुर्गति में कथा-लेखक खुद से परिहास कइले बाड़े ई कहिके कि रमजिउआ कहला से उनुका कवनो फर्क नइके पड़त अब। 'बसरोपन उपधिया' केवल बालमन के देरी तलक अझुरइले राखऽ ताड़न। ग्रामीण परिवेश के उन्मुक्त चरित्र उकेरल व्यंग्य-कथा में कथाकार अकेला मानव-मन के गुत्थी के सहजे खोल देवे के प्रयास कइले बाड़न आउर ऊ एकरा में सफल भइल बाड़न।

अकेलाजी अइसन व्यंग्यकार से ना केवल भोजपुरी बलुक हिन्दी साहित्य के भी आशा बा। देर नइखे जे भोजपुरी के 'लोढ़ा' आपन नूतन कलेवर लेके हिन्दी साहित्य का प्रांगण में प्रवेश करी। हिन्दी का पंक्ति व्यंग्यकारन के व्यंग्य 'लोढ़ा' का सामने कमअसर हो जाई, एही विश्वास का साथ हम लोढ़ा-बन्दन समाप्त करऽतानी।

...बाकिर जियान मत करीं

भारतवर्ष एगो कृषि प्रधान देश ह। इहां के लगभग अस्सी प्रतिशत जनता खेतिए पर निर्भर रहेले। काश्तकारी होखो भा खेतन में मजदूरी; शादी-वियाह से लेके श्राद्ध-संस्कार तक सभ काम खेतिए पर निर्भर रहेला। जनसंख्या बेतहासा बढ़ि रहल बा। अनाज के अंटान नइखे होखत। केतना जने के भरपेट खाये के नइखे मिलत। अइसन हालत में जदि केहू अनाज के जियान करी, त सांच कहीला, तरवा के लहर माथ पर चढ़ि जाले।

ताबड़तोड़ परोसन आ रहल बिया! रउआ चाखि के ढेरसनी जूठ छोड़के उठ जातानी। राउर घरवाली भा दोसर कवनो हित ऊ जूठन के बहार के फेंक देतारे भा जनावर के खाये खातिर हंड़िया में डाल देतारे। रउरा मन में तनिको खेद नइखे उपजत। बाकिर बूझीं तनी। रउरे मतिन जूठ त रउरा परिवार के अउरो लोग छोड़त होइहन। जोड़ीं त। जदि एक दिन में सइ ग्राम अनाज एह तरह से बरबाद होखऽता, त बरिस भर में लगभग एक मन अनाज रउआ जियान क देतानी। ईहे हाल मये देश के हो जाई त खियाल करीं, केतना जियान होखऽता। एक दिन हो सकेला, रउरे घरे भात खातिर चाउर ना होखे। त बूझी केतना कष्ट होई?

धरमशास्त्र में अनाज के महिमा गावल गइल बा। कहाउतियो में बा कि जदि एक-दू कवर रउआ रोज छोड़ देतानी, जियान क देतानी, त जेहि दिन रउरा खायक भर पूरा हो जाई, से दिन रउआ के अनाज के दर्शन ना होई।

अन्न के महिमा बखानत रिखी-मुनी लोग ग्रंथन के रचना कइले बाड़े। जे देवी अन्न के पूरा करऽतारी, उनका के अन्नपूर्णा देवी कहल गइल बा। उनकर पूजा कइल जाला। एतने ना, अन्न के ब्रह्म के नाम दिहल गइल बा। जेकर पेट रोज-रोज भरि जाला, अनपच होखो भा अउरो कवनो बेमारी, खाये में जे परहेज नइखे करि पावत, ऊ अनाज के महिमा कइसे बूझी? अनाज के महिमा जाने के होई त ओकरा से पूछल जाई जे केतना-केतना दिन के बाद एतने अनाज पावता जे ओकर क्षुधा त शान्त करऽता, बाकिर भर पेट ना कहल जा सके। ई सन्दर्भ में एगो कहानी इयाद परऽतिया—

कई दिन के भूखल एगो फकीर एगो घर का सामने जा खड़ा भइल। घर के मलिकाइन बहरी अइली। बड़ी पुजारिन रहलीं। सोचली—फकीर के भर पेट खियाके असिरबाद लिहीं। भीतर गइली आ भर थरिया भोजन लेके बहरी अइली। फकीर का हाथ

में थरिया जाइत ओकरा पहिले ऊ झपटि के थरिया के हथियवलस आ खाये लागल। तावड़तोड़। केनियो ताकत ना रहल। मलिकाइन ताकत रहली कि मन परसन्न भइला पर कुछ भलवचन कही त हियरा जुड़ा जाई। बाकिर ना, ऊ त खाये में एह कदर मसगूल रहल कि ओह घड़ी समय ठहरि गइल रहे। खा चुकला पर जूठ थरिया मलिकाइन का हाथ में बिना कवनो संकोच के देके ऊ बोलि उठल कि माई! कहां रहलू हा तू? काल्हु ना खइलीं। परसो ना खइलीं। तरसुओ ना खइलीं। कहां रहलू हा, तू माई?

रउरा बूझि गइल होखवि कि जेतना देर ऊ भोजन करत रहे, ओतना देर ऊ अन्न-ब्रह्म से साक्षात्कार करत रहे। फेरु अन्नपूर्णा देवी के पहिचनलस आ माई कहिके ओरहन देवे लागल।

जानकार लोग के मालूम बा कि अनाज जियान कइला के का नतीजा होला। बेटी के बियाहे खातिर पुनपुन के पानी पियेके पड़ेला। जेकर मुंह ना देखे के ओकर गोड़ देखे के पड़ेला। छठी के दूध इयाद आ जाला। बाकिर जब दरवाजा पर बरात आवेले त भण्डार-घर मिठाई आ भोजनादि से ठसमठस भरल रहेला। एक-एक पत्तल में दस-दस किसिम के मिठाई, बड़हन पूड़ी; तरकारी आदि बिना सोचले-समझले, बिना बूढ़-बालक के खियाल रखले परोसि दिहल जाला। ना परोसेवाला के चिन्ता, ना खायेवाला के अफसोस। कचरमकूट छकि के भोजन करे में एतना छूटि जाला पत्तल पर कि का बताईं? एक बरियात में मये गांव के लोग हित-नाता जुटि जालन आ अनाज जियान करे में तनिको अफसोस ना करेलन। बुझी त, रउरा घरे चार गो बरियात में जेतना जियान भइल होई, ओतने में एगो अउर बरियात निबट जाइत। त ई त हाल बा जियान कइला के।

काजर आंखि में फिट बइठेला त काजर कहाला बाकिर तनिको खसक के नीचे आ जाला त कारिख कहाला। जियान कइल करिखे नू हऽ। बाकिर अइसन लोग के, हित-नातन के का कहबि, जे जूठ छोड़ल आपन धर्म समझेले। फैशन समझे ले। जूठ ना छोड़ला से उनुका के भुक्खड़ समझल जाई—अइसन विश्वास करेले। वाह रे हमार संस्कार! ई संस्कार अब ना चली। छोड़े के पड़ी। एह सन्दर्भ में एगो चीज इयाद करे के बा! 'पर उपदेश कुशल बहुतेरे'। दोसर के उपदेश देवे में केहू दब ना होखे। आजु से ना, जमाना से ई कहावति चललि आवत बिया। त सबसे पहिलका काम ह एकरा के बेवहार में लावे के। रउरो परतिज्ञा क लीं कि खाइब तवन खाइब बाकिर जियान ना करबि।

बातन के रोजगरिहा नारदी राग अलापऽता। बाकिर फेर में ना पड़ेके। अन्न समस्या अइसन मुंह बवले बा कि सभे के सोचे के पड़ी। जियान कइला के भीषण परिणाम होला। कवनो पत्रिका में पढ़ले रहीं कि बड़का-बड़का होटलन में जवन जूठ छोड़ि दिहल जाला। अनाज के जियान कइ दिहल जाला, ऊ सभ बेयरा बटोरि के पहिले त कनस्तर में जमा करेलन। फेरु ओकरा के होटल के छत पर घाम में सुखा देलन। हर तरह के चीज सूख-साख के एगो अलगे चीज हो जाता। फेरु ओकरा के पिसवा दिहल जाला।

ओकरा में मजिगर मसाला आ नमक डालि के पापड़ भा ओइसने दोसर चीज तइयार कइके उहे होटल में परोसि दिहल जाला। भइल नू—मियां के जूता मियां के माथ। रउए होटल में अनाज जियान कइलीं आ रउरे के फेरु पापड़ इत्यादि का रूप में परोसि दिहल गइल। लीं, खाईं, रोग-व्याधि के बुलाईं। जियान कइला के फल एक हाथे दे एक हाथे ले वाला बात हो गइल।

त हमार बात सुनीं। आजु से रउरा परतिज्ञा क लीं कि अनाज जियान ना करब। थाली में ओतने लेब जवन ठीक से खा सकब। लइकन बुतरुअनों के आदत डालबि के जियान ना करसु। ई अपना खातिर त बढ़ियां होइबे करी, देशो खातिर, समाजो खातिर एगो बढ़ियां आदत होई। का बोलऽतानी? राउर आदत हो गइल बा जियान करे के? आदत छूटत नइखे? रउरा समझऽतानी कि छूटल काम बादशाहो से ना होखे, त ई कइसे छूटी? बाकिर इयाद करीं। राउर संकल्प, सोचे के नया तउर-तरीका राउर आदत छोड़ा दिही आ रउआ अनाज के महिमा बूझे लागबि।

कविवर श्री गणेश दत्त 'किरण' अपना 'अंजुरी भर गीत' किताब में 'रोटी' शीर्षक कविता में कहले बाड़न—

अजब पेट के जार उचित-अनुचित ना जाने देला
नीमन-बाउर के परिभाषा पहिचाने ना देला
एकरे खातिर मान छोड़ि के दागे लोग सलामी
मन आकुल आजाद रहे के बाकिर करे गुलामी
घर में गवनहरी परदेशे साजन उमर बितावे
तब हमरा रोटी के महिमा साफ समझ में आवे।

कवि मंजुल त 'घर में गवनहरी' के संताप के अपना शब्दन में बांधि के कहऽताड़न—

माई रे माई जियान भइल जिनगी,
सगरे अन्हार सुनसान भइल जिनगी

खाली अनाजे जियान नइखे होखत। जिनगियो जियान होखऽता। काहे खातिर—अनाज खातिर नू। त अनाज काहे जियान कइल जाई? आईं जा, संकल्प लिहींजा कि खाइब बाकिर जियान नइखे करे के।

अथ कहानी-कथा

कहानी के कहानी बड़ा विचित्र हो गइल बा। गरीब के मेहरारू सभ के भउजाई अस। हर ऐरन-गेरन-नत्थू-खैरन का बोली-ठिठोली के शिकार। बाकिर ओकरा त सबके सुने के बा, सहे के बा। देखे-सुने के किसिम-किसिम के रंग-ढंग त सुनहीं-सहहीं के बा, बलुक घाघ लोगन के घाघबाजियो अंगेजे के बा।

केहू कहानी का 'पाठकीयता' के सवाल उठावऽता, त केहू कहानी--लेखक के 'प्रतिबद्धता' के पटकऽता। केहू ओकरा भीतर 'कहानीपन' खातिर हाय-हाय कइले बा, त केहू ओकरा में माथा खपा-खपा के 'ठहराव' के ठहरियावऽता; यथार्थ आ अतियथार्थ के पचरा उठावऽता। केहू केहू त कहानियन के एके 'निगेटिव के प्रिंट्स' होखे के आपन नया खोज प उताने उतराता। कुछ लोगन का त सचेतन कहानी, कहानी, समांतर कहानी, जनवादी कहानी आ सक्रिय कहानी के बाद समकालीन कहानी के जामा पहिनावे के जोस में कतने घाटन के पानी पिये के पड़ल, बहस-बतकही के ढोल ढबढबावे के पड़ल। हिन्दी के एगो कथा-समीक्षक त कथा-साहित्य के सोझा आपन 'पाठक' तेयार करे के जिम्मेदारी बतावत कहलें कि कहानी त एके पाठ के बाद चुक जाले, बार-बार अपना के पढ़ावे खातिर भा पढ़े खातिर उदवेगे ले ना।

असल सवाल त ई बा कि कहानी कइसन होखो? कहानी एगो कथा-विधा ह, कवनो सुबहां नइखे। बाकी ऊ होखो त कइसन-एह प कई किसिम के झउरा बा। मत-मतवाद के दांव-पेंच में बात अतना अझुरा गइल बा कि सही आ सांच से हमनी दूर होत गइल बानी कि ऊहे दूर हो गइल, कहल मुश्किल बा। अइसन त नइखे कि सही आ सांच फरकिआवल नइखे जा सकत भा अइसन कोसिस नइखे भइल, बाकिर एकरो से इनकार नइखे कइल जा सकत कि कुछ-कुछ भोरइला-भुलाइला अस बतियावे के हमनी के स्टाइल हो गइल बा।

अइसन काहे भइल, 'कब भइल, के कइल आ अबहुंओ काहे हो रहल बा—एह सवन प विचारे के जरूरत के नकारल नइखे जा सकत।

'सर्वात्मवाद' के कोख से जनमल पंचतंत्र के कहानी मानव-मूल्यन के आ ओकर गुन-अवगुन के रेखिआवे के बल-बेवंत राखेले। एह समय त फैलत-सिकुड़त, बढ़त-घटत आदमियाइत भाव के बीच से आदमी के जीवट के प्रकट करत आ कवनो खास धारा के

धकमपेल से अलग, आदमी आ आदमी के बीच के संबंध के बढ़त-घटत समीकरण के सोझा करत कहानी आदमी के मन-मिजाज के जरूरे पसीझबले बा, सोचे-समझे खातिर मजबूर कइले बा।

एह बात के झुठावल नइखे जा सकत कि कहानी के जड़ में कविता होले, जवन कि ओकर सर्जनात्मकता के पहचान होले। कविताई से दूर कहानी नीरस आ उचाट होई। रसहीनता के हालत में ऊ कहानी ना रह जाई। भाषा में हवाई कलाबाजी से चमत्कार पैदा कइल जा सकऽता, बाकिर कहानी के दमगर नइखे बनावल जा सकत। बलुक भाषा के सांगठनिक चेतना के सहज बेवहार से कहानी में रस पैदा कइल जा सकऽता। तब कहानी बार-बार पढ़े के आ पढ़ावे के मन आ दम दूनो राखे लागी।

कहानी के विषय में अतना कहल जा चुकल बा कि कुछुओ कहत लेंगी लगावला अस लागत बा। बाकी जब कहहीं के बा, त जरूरे कहब कि कहानी के जवन गत-दुरगत हो रहल बा, ओकरा में कहानी के आत्मा के ठीक से ना जानेवाला आलोचको कम दोषी नइखन। एके रंग, एके पावर के चश्मा के भीतर आंख मटकिआवत आलोचक अपना विचार आ चिंतन में अतना आत्मग्रस्त बाड़न कि हरियर-हरियर दूबे प बइठ के एगो अलगे राग अलापे लागत बाड़न। कहानी आ कहानीकार से अलग-कवनो जिम्मेवारी के जोखिम से अलग-अपना मन माफिक।

कहानी खाली हिन्दिये में नइखे लिखात। हर भाषा आ बोली के आपन कथा-कहानी बा, जवन कि आजो लिखा रहल बा। कवनो भाषा के साथे एगो जीवित समाज होला। ऊ समाज अपना भाषा आ बोली में आपन सुख-दुख दुहरावेला। हिन्दी से मिलल-जुलत कथा-कहानी भोजपुरियो में लिखल जा रहल बा। त असल बात ई कि भोजपुरी भाषा आ बोली के जमीन, माटी आ ओकर सुभाव के जानल पहिचानल जरूरी बा। कहानी के फैलाव के जानल समझल, ओह जमीन के बूझल-बतिआवल एगो नया विश्वास पैदा करी। एह दरम्यान भोजपुरी कहानी के सफर के ओर ध्यान गइल त लागल कि लोक आ धरती से जुड़ल अनुभव आ ओह अनुभवन के लोक-भावना के साथ लोक सहमति के लोक-स्तर प व्यवहारिक रूप में पूरा जिम्मेवारी आ मनोबल के साथ लिखल भोजपुरी कहानी, न केवल भोजपुरी पाठकन खातिर, बलुक हिन्दी कहानियन के पाठक लोगन खातिर भी एगो नया अनुभव आ अनुभूति दी।

भोजपुरी कहानी काहे? हिन्दिये काहे ना? उत्तर भरसक ई होई कि कवनो लोक भाषा के साहित्य से मतलब ई कि ऊ अपना जमीन के जीवन, ओकर सचाई आ ढंग-ढर्रा के ठीक से उठाई। ऊ ओकरा साथे सौतेला बेवहार ना करी। आपन खूबी-खामी के बीच खड़ा हो के लोकमंगल के भाव स्थापित करी। सांच त इहेबा कि कहानी के कहानी बनावे में माटी आ जिनगी के तमाम अझुरहट के संगे-साथे ओह जमीन के सुन्दरता के भीतर के सचाई के जानल-पहचानल आवश्यक बा। तबहीं कहानी मन के छूवे में समर्थ होई आ

आपन सामाजिक भूमिका निबाही।

भोजपुरी कहानियन प एक नजर फेरला प लागऽता कि आपन माटी आ जीवन से जुड़ल भोजपुरी कहानी मानवीय सम्बंधन में लागल घुन के ओर ना खाली इशारा करत बा, बलुक सामाजिक बदलाव के पृष्ठभूमि भी देखावत-समझावत बा।

लोकभाषा के आपन कथा-कहानी शुरुए से रहल बा। भोजपुरी एह से अलग नइखे। अइसन नइखे कि भोजपुरी कहानी के अनुवाद दोसर कवनो भाषा में नइखे भइल। चाहे भारतीय भाषा होखे चाहे कवनो विदेशी, ओकरा में भोजपुरी कहानियन के अनुवाद भइल बा। भोजपुरी में सशक्त कहानी के स्वस्थ परंपरा फूल-फल रहल बा।

यहां सवाल ई नइखे कि कवन भाषा केतना बलवान बा, कवना के पास कइसन कहानी बा, ऊ कवनो हिन्दी कहानी के सामने कवना रूप में खड़ा हो रहल बा। असल सवाल त ई बा कि भोजपुरी के कहानीकार भोजपुरी समाज के असल संवेदना से कतना आ कवना रूप में जुड़ल बाड़न? भोजपुरी समाज के मूल समस्या से आंख फेर के बढ़िया कहानी नइखे देल जा सकत।

एह प्रसंग में हमरा से सवाल पूछल जा सकेला कि भोजपुरी में ई सब मानंदडन पर खरा उतरेवाला कहानीकार के-के बाड़न, त हमरा एह कहे में कतहीं आनन्द नइखे होत कि केहू नइखे अइसन कहानीकार जे भोजपुरी लोक आ धरती से जुड़ल अनुभव के लोक भावना आ लोक सहमति से लोकस्तर प पूरा जिम्मेवारी आ मनोबल के साथ भोजपुरी कहानी लिखले बाड़न। बाकी इहो बात सच नइखे कि भोजपुरी में कहानी नइखे, कहानीकार नइखन। बाड़न, बिश्वास करीं।

मधुकर सिंह, मिथिलेश्वर, सुरेश कांटक, विजेन्द्र अनिल, अनन्त कुमार सिंह, कृष्णानंद 'कृष्ण', भगवती प्रसाद द्विवेदी प्रभृति कहानीकार लोग आपन माटी आ जीवन से जुड़ल कहानी भोजपुरी में सोचऽताड़न आ हिन्दी में लिखताड़न; त दोसर तरफ आचार्य गणेशदत्त 'किरण', रामजी पांडेय 'अकेला', रामेश्वर प्रसाद वर्मा आदि लेखक भोजपुरी में लिखताड़न, मुदा उन्हकर लेखन भोजपुरी माटी आ जीवन से पूरा जुड़ल नइखे। कारण कि ई सभे हिन्दी मानसिकता लेके कहानी-रचना करि रहल बाड़न। परिणाम ई बा कि अपन सर्वांग में भोजपुरी कहानी नइखे लिखात, जेकरा के मानक मानल जा सके।

साहित्य का अक्षर-पुरोहित प्रो. शिवनाथ चौबे

'भोजपुरी माटी' का जनवरी '98 अंक अक्टूबर '98 में मिलल, त जनलीं कि प्रो. शिवनाथ चौबे दिसम्बर '97 में गोलोकवासी भइलन। मन बड़ा आहत-व्याहत भइल। एतना उमिर त ना भइल रहे कि साहित्य के सतत भासमान सूर्य अचके डूबि जाइत। 'भोजपुरी माटी' से जे जुड़ल बा, ऊ जानऽता कि चौबे जी के अग्रलेख (संपादकीय) कवन तरह विषय-वस्तु के सहेजत-सहेजत एक अभिप्रेरणा बन जात रहे। हमरा 'भोजपुरी माटी' पर आक्रोश भइल कि कवना कारण से ऊ जनवरी वाला अंक हमरा पास अक्टूबर में आइल, जबकि ओकरा में हमर एगो लेख परकासित होखल रहे। कारण का विस्तार में जाये के नइखे, चौबेजी का मुअला से ढरत आंसू सहेजे के बा, काहे कि मउअत एगो खालीपन छोड़ि जाले, जेकरा के भरे खातिर खाली स्मृति-तर्पण काम ना करी, बलुक भोजपुरी साहित्यागार के अक्षर-कलश खाली ना रहि जाय, एकर चिन्ता सार्वजनिक करे के पड़ी।

इयाद नइखे चौबेजी से कब पहिलका भेंट भइल, बाकिर इयाद बा कि किरणजी अउर अकेला जी एक दिन हमरा बक्सर-आवास पर सबेरे पधरलीं जा अउर कहलीं कि चलीं, चौबेजी आ रहल बाड़न, उनुकर स्वागत करीं अउर उतारि के ले आईं जा, सांझि खा गोष्ठी होखी। बक्सर नया नया आइल रहलीं, बाकिर वहां के कवि-समाज से अपना डेरा पर आयोजित गोष्ठी में दरसन भइल रहे। चौबेजी से हमार परिचय ना रहे, बाकिर रास्ता मे किरणजी बतवलन कि ऊ 'भोजपुरी माटी' के संपादक हवन अउर कलकत्ता के एक कउलेज में प्रोफेसरियो करत बाड़न। तबले भोजपुरी बूझत समझत त रहलीं, बाकिर भोजपुरी में लिखत ना रहलीं अउर 'भोजपुरी माटी' देखवो ना कइले रहलीं, एह कारण चौबेजी में कवनो आकर्षण ना बुझाइल। परन्तु जब जनलीं कि कलकत्ता में हिन्दी के प्रोफेसरियो करऽ ताड़न चौबेजी, त अयाचित स्फूर्ति आइल भीतर से कि चलीं, तब त ठीक बा। काहे कि हमहूं कलकत्ता के विद्यासागर कालेज मे पढ़ले बानीं, एह से कलकत्ता-प्रेम जाग गइल।

स्टेशन पहुंचलीं, चौबेजी गाड़ी से उतरलन, परिचय भइल अउर लागल कि इनिकर व्यक्तित्व त अपरिचित नइखे बुझात। साहित्य-सूर्य का किरण के कवनो भासा ना होला। ओकरा से परभासित होला पर सब केहू के स्फुरण हो आला। तइसहीं चौबेजी का प्रथम दर्शन पर हमरा के बुझाइल और तब लगलीं स्वयं के सहेजे कि अइसन महान व्यक्तित्व

के सामने आपन कवन-कवन कविता सुनाइब।

किरणजी से भी नया परिचय रहे। उनुका काव्य रचना के आस्वाद ना भेटल रहे, बाकिर उनका वाक्पटुता और बात-बात में काव्य-उद्धरण प्रस्तुत कइला के कारण उनुकर प्रभाव हमरा पर रहे। अकेला जी वस्तुतः अकेला रहन। बातचीतो में अकेला। हम निस्पीट्टर रहलीं अउर अकेला जी टीटीई। एह कारण जी सर-जी सर कहि के हमरा के अगरावत रहलें। मुदा उनकर रचना कौशल के परिचय पहिले से रहे, त हम हुनका खूब आदर देत रहलीं।

सांझ खा कविगोष्ठी भइल। आपन बारी आइल, त कविता सुनवलीं। शेष में जब चौबेजी भाषण देवे खातिर उठलन, त लागल, सरस्वती उनुका जीभ पर बैठल बाड़ी। हतप्रभ भइलीं, जब पवलीं कि भाषण का बीच-बीच में दृष्टान्त बदे हमर सद्यः सुनल कविता के उद्धरण दिया रहल बा। अहसास भइल उनकर वाग्मिता, पटु भाषण-कौशल से खाली हमहीं ना, पूरा जनसभा विमोहित बा। ऊ कलकत्ता लवटलन, त लागल कवनो बहुमूल्य वस्तु आंखि से ओझल हो गइल बा।

बाद में, कई एक बार, कलकत्ता गइलीं, त बराहे भोजपुरी माटी कार्यालय, उनुकर मदनमोहन वर्मन रोड आवास पर जाए के मौका मिलल। आत्मीय सत्कार मिलल। खूब मीठ चाह मिलल। लिखे-पढ़े के ढेर ढेर बातन के साथ कहलन-राउर कविता बड़ नीक लागऽता। चिनगारी अस। रउआ भोजपुरी में काहे नइखीं लिखत? बोललीं-मगही भाषी हईं, त भोजपुरी में? त झट से बोललन-भासा कउनो घेरा में ना खुद बंदी बिया, ना दोसरा के बान्हऽतिया। अपना कथ्य के बहुजन तक पहुंचावे खातिर लोग कई एक भासा में भाव-प्रकाश कर सकेला।

बाद में हमार कईगो कविता अउर एगो कहानी 'मन ना मानल' भोजपुरी माटी में छपल अउर ढेर प्रशंसा बटोरलस। आजु हम मानऽतानी जे भाषा के प्रति हमरा संस्कार में वृद्धि भइल बा, जेकर मूल में चौबे जी रहलन।

चौबेजी बहुभाषाविद् रहले। उनुका भासन में अंग्रेजी, ओड़िया, बंगला, संस्कृत भासा के उद्धरण दियाइल त आम बात रहे। कबो लैटिन का उदाहरण मय अर्थ के दिहला से भासन जायकेदार हो जात रहे। संपादकीय में राजनीतिक जानकारी के सटीक समीकरण देके वर्तमान का सच पर घटावत रहलन, जेकरा के पढ़के केहू भी राजनीति के कखग जानेवाला होशियार हो जाइत, एह में सन्देह नइखे।

आजुकाल एगो 'अच्छा आदमी' मिलल ढेर मुश्किल बा। चौबे जी एगो 'अच्छा आदमी' रहलन। अच्छा आदमी के गुण ह सदाचरण जेकर निर्वाह ऊ निर्भय होके करेला। शेक्सपियर लिखले बा

His life was gentle
And the elements so mixed in him
That nature might stand up
And say to all the world :
This was a man.

चौबेजी सच्चा अर्थ में एगो 'आदमी' रहलन, एकरा में जे शक करी, ऊ नराधम होखी। दुर्भाग्य बा, जे हम अइसन अच्छा आदमी के खो दिहिलीं। मध्य प्रदेश के कोरबा का कोरा में हमार मोती हेराइल बा। बाकिर ऊ मोती के आब हमार दिल में बा, भोजपुरी माटी के पन्ना में बा, भोजपुरी संसार के कण-कण में व्यापल बा, त हम छूछ नइखीं भइल। हमार विश्वास बा कि शिवनाथ चौबेजी स्वर्गलोक में ब्रह्मो-विष्णु के समक्ष भाषण दिहें, त भोजपुरी साहित्य से उद्धरण देबे में कोताही ना करिहें।

❑❑❑